रसूलुल्लाह ﷺ की साहबज़ादियां

रज़ियल्लाहु अन्हुन -न- अजमईन

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

रसूलुल्लाह ﷺ की साहबज़ादियां

रज़ियल्लाहु अन्हुन न- अजमईन

रसूलुल्लाह ﷺ की साहबज़ादियां

रज़ियल्लाहु अन्हुन्न- न- अजमईन
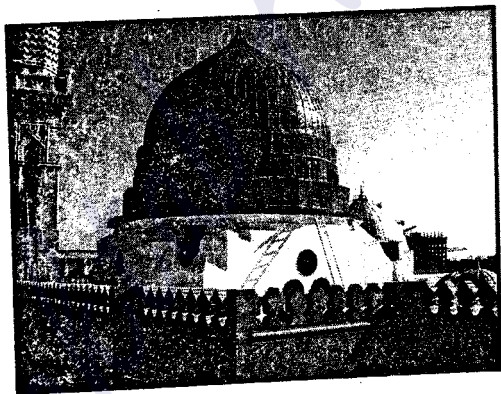
लेखक

मौलवी मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

www.idaraimpex.com

पुस्तक का नाम :

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादियां

लेखक

मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

Rasulullah s.a.w. Ki Sahabzadiyan

प्रकाशन : 2014

ISBN 81-7101-444-5

TP-281-14

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar

New Delhi-110 025 (India)

Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786

Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.co**

Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop:

IDARA IMPEX

Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin

New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ

दो शब्द

बिइस्मिही सुबूहानहू   بِاسْمِهٖ سُبْحَانَهٗ

हुब्बी व मुहिब्बी जनाब मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही साहब बुलन्दशहरी ने बहुत-से उन्वानों (शीर्षकों) के तहत भारी तायदाद में अलग-अलग दीनी किताबें लिखी हैं, जो आम व ख़ास में बहुत पसन्द की गई हैं और बहुत-से इदारों से छपती रही हैं।

आपने औरतों के सुधार के लिए भी कुछ किताबें लिखी हैं और इस विषय में आपको ख़ास दिलचस्पी है।

दीन से बे-फ़िक्री और आख़िरत से ग़फ़लत जो औरतों में दिन-ब-दिन बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है, उसकी रोकथाम का यह एक ही ज़रिया है कि उन्हें क़ुरआन व हदीस के हुक्मों, नसीहतों, अच्छी बातों और आदाब व अख़्लाक़ से आगाह किया जाए और नुबूवत के दौर की औरतों यानी हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की पाक बीवियों और पाक बेटियों और दूसरी सहाबियात की अच्छी ख़ूबियों और अच्छे हालात की जानकारी दी जाए।

मौलाना ने इस सिलसिले में दो किताबें तैयार फ़रमाई हैं। एक 'उम्मते मुस्लिमा की माएं', दूसरी 'रसूलुल्लाह ﷺ की साहबज़ादियां।' पहली में पाक बीवियों के हालात लिखे हैं और दूसरी में सरदारे दो जहां ﷺ की साहबज़ादियों के तफ़्सीली हालात लिखे हैं। ये हालात

बड़े सबक़ वाले हैं, हर घर में इनको सुनाने की ज़रूरत है। तमाम मुसलमानों से गुज़ारिश है कि इन किताबों को ज़्यादा से ज़्यादा फैलाएं।

मौलाना की एक किताब 'मुस्लिम ख़वातीन के लिए बीस सबक़' के नाम से भी मशहूर है और जानी-पहचानी जाती है। इन दोनों किताबों के साथ इसे भी पढ़ डालें।

अल्लाह जल—लशानुहू मौलाना की कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाएं और बिगड़े हुए समाज के सुधार का ज़रिया बनाएं। व मा ज़ालि-क अलैहि बिअज़ीज़० وَمَا ذَالِكَ عَلَيْهِ بِعَزِيْزٍ

बन्दा **मुहम्मद शफ़ीअ** अफ़ल्लाहु अन्हु

4 ज़ुलहिज्जा 1393 हि०

अपनी बात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम०

अम्माबाद, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल व करम से इंसानों की हिदायत के लिए उन ही में से पैग़म्बर भेजे, ताकि इंसान उनसे अपनी ज़िंदगी गुज़ारने का वह तरीक़ा सीखें, जो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त को पसन्द है और ज़िंदगी के हर शोबे में वही तरीक़ा अपनाएं जो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उनके पैग़म्बरों के वास्ते से उन तक भेजा। पैग़म्बर सिर्फ़ कहकर ही बताने वाले नहीं होते थे, बल्कि अमल करके भी दिखाते थे, इसीलिए जिन्न या फ़रिश्ते रसूल बनाकर नहीं भेजे गए, क्योंकि इंसानी ज़िंदगी के तमाम शोबों को करके दिखाना इंसान ही का काम है, चूंकि करके दिखाना और अमल पर डालना भी मक़्सूद था, इसलिए हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ने अमली तौर पर भी इंसानी ज़िंदगी में पेश आने वाले कामों की रहनुमाई की, ताकि उम्मत उनकी पैरवी कर सके और उनके अमल की पैरवी करके अल्लाह को राज़ी करने में कामयाब हो।

हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की सीरत पढ़ने से पता चलता है कि इनमें से कुछ ने उद्योग-धंधे और

दस्तकारी भी की है और कुछ ने हुकूमत का निज़ाम भी संभाला है। अक्सर पैग़म्बरों की ज़िंदगी से क़ौमों के उरूज व ज़वाल और जीत और हार के राज़ मालूम होते हैं, ग़रज़ यह कि तमाम वे मामले जो इंसानों की ज़िदंगी में पेश आया करते हैं, उनके बारे में उम्मतों को उनसे अमल की राह मिलती रही है, ख़ास तौर से सैयदुल अंबिया वल अस्फ़िया सैयदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की ज़िंदगी तो खुली किताब की तरह इस तरीक़े पर महफ़ूज़ है कि ज़िंदगी का कोई शोबा छिपा हुआ नहीं है, सब कुछ साफ़ और ज़ाहिर है। हर आदमी को आपकी ज़िंदगी से सबक़ मिल सकता है।

आपसे पहले जितने पैग़म्बर अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए, चूंकि उनके बाद भी पैग़म्बर आने वाले थे, इस लिए उनके बाद उनकी तालीम की हिफ़ाज़त न की गई और आप चूंकि ख़ातमुन्नबीयीन बनाकर भेजे गए, इसलिए क़ियामत तक आपकी तालीम की पैरवी इंसानी दुनिया के लिए ज़रूरी और उसका मानना वाजिब है और आपके क़ौल और आपके अमल की तालीम पूरी की पूरी और हिस्से-हिस्से के एतबार से महफ़ूज़ है।

सैयदे आलम ﷺ ने बाज़ारों में तब्लीग़ भी की और चीज़ों का भाव भी किया। कभी-कभी किसी के पास अपनी कोई चीज़ रेहन भी रखी, बेवा औरतों से भी निकाह किया और कुंवारी औरत से भी। बीवियों के पहले शौहर से जो औलाद थी, उन्हें पाला भी और अपने बच्चों को भी पाला। बेटियों की शादी भी की। इन सब बातों में उम्मत के लिए नमूना मिलता है। आपका उठना-बैठना, चलना-फिरना,

बातें करना, सोना-जागना, खाना-पीना वग़ैरह सब कुछ मालूम भी है, और लिखा हुआ भी मिलता है।

आंहज़रत ﷺ की इज़्दवाजी (मियां-बीवी के ताल्लुक़ात वाली) ज़िंदगी और आपकी पाक बीवियों की ज़िंदगी के हालात व वाक़ियात नाचीज़ ने एक किताब[1] में जमा कर दिए हैं। अब इस किताब में आंहज़रत ﷺ की साहबज़ादियों के हालात लिख रहा हूं और इन दोनों किताबों के लिखने का मक़सद यह है कि उम्मत इनको पढ़कर औलाद के पालने-पोसने और विवाह-शादी करने के बारे में हादी आज़म ﷺ की ज़िंदगी की पैरवी कर सके और अपनी बीवियों और बेटियों को सैयदे आलम ﷺ के घरानों में रहने वाली पाक औरतों की ज़िंदगी के निशानों पर चला सके।

सैयदे आलम ﷺ की बीवियों और बेटियों रज़ियल्लाहु तआला अन्हुन-न का दीन के लिए तक्लीफ़ें सहना, आख़िरत की फ़िक्र करना, भूख व प्यास पर सब्र करना, अल्लाह के ज़िक्र में लगा रहना, घर के कामकाज से शर्म न करना और दीन सीखना और उसको फैलाना, सदक़ा व ख़ैरात में बे-मिसाल होना, हाथ की कमाई से सदक़ा करना, जिहाद और लड़ाइयों में शरीक होना वग़ैरह वग़ैरह मिलेगा। मुसलमान औरतों को इन मामलों में उन पाक औरतों की पैरवी करना ज़रूरी है, जिन्होंने नुबूवत के घरानों में सैयदे आलम ﷺ की हिदायत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार कर कामयाबी हासिल की। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुन-न।

---

1. किताब का नाम 'उम्मते मुस्लिमा की माएं' है। इदारा इशाअते दीनियत नई दिल्ली-13 से तलब करें

आज की मुसलमान कहलाने वाली औरतें दीन से जाहिल और आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गई हैं और अपनी ज़िंदगी उन तरीक़ों पर गुज़ारने को, जिन पर चलकर सैयदे आलम ﷺ की बीवियां और बेटियां अल्लाह के दरबार में मुक़र्रब हुईं, शर्माती हैं और काफ़िर लेडियों और मुश्रिक औरतों और फ़ैशनेबुल माडर्न ईसाई, यहूदी औरतों के तौर और तरीक़ों को पसन्द करने लगी हैं।

इस पर तमाम हदीस के माहिर और तारीख़दां मुत्तफ़िक़ हैं कि सैयदे आलम ﷺ ने ग्यारह निकाह किए, जिनमें सबसे पहली बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा थीं। इनके अलावा और किसी बीवी से आपकी औलाद नहीं हुई। इन्हीं के पेट से आपके साहबज़ादे और साहबज़ादियां पैदा हुईं और इनके अलावा आपकी बांदी मारिया क़िब्तीया रज़ियल्लाहु अन्हा से एक साहबज़ादे पैदा हुए, जिनका नाम इब्राहीम था। इस पर भी सब एक राय हैं कि सैयदे आलम ﷺ के साहबज़ादों में से कोई भी बालिग़ होने की उम्र को नहीं पहुंचा। सबने बचपन ही में वफ़ात पाई। अलबत्ता आपकी साहबज़ादियां बड़ी हुईं और उनकी शादियां भी हुईं और सबने इस्लाम क़ुबूल किया और मदीना मुनव्वरा को हिजरत की। अल-इस्तीआब में लिखा है कि—

وَاَجْمَعُوْا اَنَّهَا وَلَدَتْ لَهٗ اَرْبَعَ بَنَاتٍ كُلُّهُنَّ اَدْرَكْنَ الْاِسْلَامَ وَهَاجَرْنَ
وَهُنَّ زَيْنَبُ وَ رُقَيَّةُ و اُمُّ كُلْثُوْمَ وَ فَاطِمَةُ

'इसे सब मानते हैं कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट

से आंहज़रत ﷺ की चार साहबज़ादियां पैदा हुईं। सबने इस्लाम का ज़माना पाया और इस्लाम क़ुबूल किया और हिजरत की। उनके नाम इस तरह हैं—1. हज़रत जैनब, 2. हज़रत रुक़ैया, 3. हज़रत उम्मे कुलसूम 4. हज़रत फ़ातिमा, रज़ियल्लाहु अन्हुन-न।

सीरत लिखने वाले इसमें एक राय नहीं हैं है कि सैयदे आलम ﷺ के साहबज़ादे कितने थे? और एक राय न होने की वजह यह है कि इन सबने बचपन ही में वफ़ात पाई और उस वक़्त अरब में तारीख़ का ख़ास एहतिमाम न था और उस वक़्त सहाबा रज़ि० जैसे जां-निसार भी बड़ी तायदाद में मौजूद न थे, जिनके ज़रिए उस वक़्त की पूरी तारीख़ महफ़ूज़ हो जाती। क़तादा रह० का क़ौल है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से आंहज़रत ﷺ के दो साहबज़ादे और चार साहबज़ादियां पैदा हुईं। एक साहबज़ादे का नाम क़ासिम رضي الله عنه था, जो पांव-पांव चलने लगे थे। उन्हीं के नाम पर आंहज़रत ﷺ की कुन्नियत अबुल क़ासिम मशहूर हुई।

दूसरे साहबज़ादे का नाम अब्दुल्लाह था। वह बहुत ही छोटेपन में वफ़ात पा गए। सीरत लिखने वालों के बड़े आलिम ज़ुबैर बिन बक्कार रह० का क़ौल है कि सैयदे आलम ﷺ की औलाद की तायदाद और तर्तीब यों है। पहले हज़रत क़ासिम رضي الله عنه पैदा हुए। वह आपकी औलाद में सबसे बड़े थे। उनके बाद हज़रत जैनब रज़ि० और उनके बाद हज़रत अब्दुल्लाह رضي الله عنه की पैदाइश हुई। उन ही का लक़ब तैयिब رضي الله عنه और ताहिर رضي الله عنه मशहूर हुआ। उनकी पैदाइश नुबूवत के बाद हुई थी। उनके बाद हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० और उनके बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ि० और उनके बाद हज़रत रुक़ैया रज़ि० की

पैदाइश हुई। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुन-न अजमईन। फिर मक्का ही में दोनों साहबज़ादों की वफ़ात हो गई, पहले हज़रत क़ासिम रज़ि० की और उनके बाद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० की। (अल-इस्तीआब)[1]

इन दोनों बुज़ुर्गों के क़ौल से मालूम होता है कि आंहज़रत ﷺ के सिर्फ़ दो साहबज़ादे (हज़रत क़ासिम रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि०) हज़रत ख़दीजा रज़ि० से पैदा हुए। इनके अलावा तीसरे साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैयिबा में आपकी लौंडी हज़रत मारिया क़िब्तीया रज़ियल्लाहु अन्हा से पैदा हुए। इस हिसाब से आंहज़रत ﷺ के तीन साहबज़ादे हुए और यही उलेमा मानते हैं। कुछ उलेमा ने तैयिब और ताहिर अलग-अलग दो लड़कों के नाम बताए हैं। उनका कहना यह है कि हज़रत अब्दुल्लाह के ये दोनों लक़ब न थे, बल्कि ये दो साहबज़ादे उनके अलावा थे। इस तरह आंहज़रत ﷺ के पांच साहबज़ादे हो जाते हैं और कुछ उलेमा का यह क़ौल भी है कि तैयिब और ताहिर दोनों एक ही साहबज़ादे के नाम थे और हज़रत अब्दुल्लाह इनके अलावा थे। इस हिसाब से आंहज़रत ﷺ के चार साहबज़ादे होते हैं और कुछ उलेमा ने यह भी लिखा है कि आंहज़रत ﷺ के सात साहबज़ादे थे— 1.हज़रत क़ासिम, 2. हज़रत अब्दुल्लाह, 3. हज़रत तैयिब, 4. हज़रत मुतय्यब,

1. अल-इस्तीआब में ज़ुबैर बिन बक्कार ने हज़रत ख़दीजा रज़ि० के तज़्किरे में साफ़ तौर पर लिखा है, लेकिन हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के तज़्किरे में फ़रमाया है कि पाक बेटियों की पैदाइश की तर्तीब सही ख़बरों के एतबार से यों है कि पहले हज़रत ज़ैनब, दूसरे हज़रत रुक़ैया, तीसरे हज़रत उम्मे कुलसूम और चौथी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुन-न।

5. हज़रत ताहिर, 6. हज़रत मुतह्हर, 7. हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन। लेकिन अक्सर उलेमा यही मानते हैं कि आंहज़रत ﷺ के तीन ही साहबज़ादे थे, रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम०।

चूंकि आंहज़रत ﷺ के तमाम साहबज़ादे बचपन ही में वफ़ात पा गए, उनके हालात नक़ल नहीं किए गए हैं, इसलिए हमने इस किताब में सिर्फ़ आंहज़रत ﷺ की साहबज़ादियों के हालात जमा करने का इरादा किया है, अलबत्ता किताब के आख़िर में हज़रत इब्राहीम ؓ के कुछ हालात जमा कर दिए हैं जो हदीस और सीरत की किताबों में मिलते हैं और जिनका मालूम होना मुसलमानों के लिए नसीहत और हिदायत की वजह होगा। पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि नाचीज़ को और नाचीज़ के बुज़ुर्गों और मां-बाप को अपनी ख़ुसूसी दुआओं में याद फ़रमाएं।

—मुहम्मद आशिक़ इलाही, बुलन्दशहरी अफ़ल्लाहु अन्हु

सफ़र 1374 ई०

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

यह आंहज़रत ﷺ की सबसे बड़ी साहबज़ादी हैं, बल्कि कुछ उलेमा ने इनको आंहज़रत ﷺ की सबसे पहली औलाद बताया है और लिखा है कि हज़रत क़ासिम ؓ की पैदाइश इनके बाद हुई। इब्नुल कलबी का यही क़ौल है और अली बिन अब्दुल अज़ीज़ अलजुरजानी रह० ने हज़रत क़ासिम ؓ को बड़ा और हज़रत ज़ैनब रज़ि० को छोटा बताया है, हां, यह सभी मानते हैं कि साहबज़ादियों में सबसे बड़ी हज़रत ज़ैनब रज़ि० थीं।

उनकी पैदाइश सन् 30 मीलाद नबवी में हुई, यानी जिस वक़्त वह पैदा हुईं, आंहज़रत ﷺ की उम्र शरीफ़ 30 साल थी। (ज़-क-रहू फ़िल इस्तीआब)

सैयदे आलम ﷺ 40 साल की उम्र में नबी बनाए गए। इस हिसाब से हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़िंदगी के शुरू के दस वर्ष नबी बनने से पहले गुज़रे और तेरह साल इसके बाद। मुश्रिकों की ओर से सैयदे आलम ﷺ को और आपके घर वालों को जो तक्लीफ़ें पहुंचीं, उन सब में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा और उनकी बहनें शरीक रहीं। सन् 07 नबवी में आंहज़रत ﷺ और आपके साथियों को शेबे अबी तालिब में क़ैद कर दिया गया, वहां तीन वर्ष तक क़ैद रहे और फ़ाक़ों (उपवास) पर फ़ाक़े गुज़रे। इन सब मुसीबतों में हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और आंहज़रत ﷺ की औलाद सभी शरीक रहे।

निकाह

सैयदे आलम ﷺ ने उनका निकाह हज़रत अबुल आस رضي الله عنه बिन रबीअ से कर दिया था। अबुल आस उनकी कुन्नियत (उपनाम) है। उनका नाम किसी ने लक़ीत और किसी ने ज़ुबैर और किसी ने हुशैम बताया है। व क़ी—ल—ग़ैर ज़ालिक।

हज़रत अबुल आस رضي الله عنه हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन हाला बिन्त ख़ुवैलद के बेटे थे। इस तरह वह हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के ख़लेरे भाई हुए। मक्का में उनकी पोज़ीशन मालदारी और तिजारत व अमानत में बड़ी ऊंची थी। नबी बनाए जाने से पहले भी सैयदे आलम ﷺ को उनसे गहरा ताल्लुक़ था। कुछ उलेमा ने यह भी कहा है कि उन्होंने सैयदे आलम ﷺ से 'मुवाख़ात' (भाई-भाई बनाना) कर ली थी, यानी आपको अपना भाई बना लिया था। (अल-इसाबा)

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से उनका निकाह मक्का में हो गया था। उस वक़्त तक हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा भी ज़िंदा थीं।[1]

हज़रत अबुल आस मक्का में मुसलमान नहीं हुए, बल्कि इस्लाम क़ुबूल करने से इंकार कर दिया, पर मक्का के मुश्रिकों के कहने पर हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को तलाक़ भी नहीं दी। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने उनकी इस बात पर तारीफ़ फ़रमाई और फ़रमाया कि अबुल आस ने बेहतरीन दामादी का सबूत दिया।[2]

1. इस्तीआब, भाग 4, पृ० 126,
2. इस्तीआब,

ये बातें शुरू इस्लाम की हैं। उस वक़्त हुक्म नहीं आए थे, इसलिए यह सवाल पैदा नहीं होता कि मुसलमान औरत काफ़िर के निकाह में कैसे रहती रही, फिर जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने मदीना मुनव्वरा को हिजरत फ़रमाई तो अपनी बीवी हज़रत सौदा रज़ि० और अपनी साहबज़ादियों हज़रत फ़ातिमा और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हुन-न को बुला लिया, लेकिन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपने शौहर के पास ही रहीं।

हिजरत

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा मक्का ही में अपने शौहर के पास रहीं, यहां तक कि उनको शिर्क की हालत ही में छोड़कर 02 हि० में बद्र की लड़ाई के बाद मदीना मुनव्वरा को हिजरत फ़रमाई। हज़रत अबुल आस कुफ़्र की हालत में मक्का के मुश्रिकों के साथ बद्र के मौक़े पर मुसलमानों से लड़ने के लिए आए। लड़ाई में शरीक हुए, मुसलमानों को जीत मिली और हज़रत अबुल आस बिन रबीअ दूसरे मुश्रिकों के साथ क़ैद करके मदीना लाए गए। उनको हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन नोमान अंसारी रज़ि० ने क़ैद किया था। बद्र से हार कर जब मक्का के मुश्रिक अपने वतन पहुंचे तो क़ैदियों को छुड़ाने के लिए हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की ख़िदमत में क़ैदियों का फ़िदया (जान का बदला) भेजा। हर एक क़ैदी के रिश्तेदारों ने कुछ न कुछ भेजा था। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने शौहर को छुड़ाने के लिए अम्र बिन रबीअ को माल देकर रवाना किया। (यह हज़रत अबुल आस के भाई थे) उस माल में एक हार भी था जो हज़रत

ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने शादी के वक़्त हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को दिया था। उस हार को देखकर अल्लाह के रसूल ﷺ को हज़रत ख़दीजा याद आ गईं और आप पर बहुत रिक़्क़त तारी हो गई, (यानी रुंहासे हो गए) और जां-निसार सहाबा रज़ि० से फ़रमाया कि तुम मुनासिब समझो तो ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के क़ैदी को यों ही छोड़ दो और उसका माल वापस कर दो। इशारों पर जान देने वाले सहाबा रज़ि० ने ख़ुशी से इसे क़ुबूल कर लिया और सबने कहा, जी, हमको इसी तरह मंज़ूर है।

चुनांचे हज़रत अबुल आस छोड़ दिए गए, लेकिन सैयदे आलम ﷺ ने उनसे यह शर्त कर ली कि ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को मक्का जाकर मदीना के लिए रवाना कर देना। चुनांचे उन्होंने यह शर्त मंज़ूर कर ली और फिर उसको पूरा किया, जिसकी वजह से सैयदे कौनैन ﷺ ने उनकी तारीफ़ की और यह फ़रमाया, حَدَّثَنِیْ فَصَدَقَنِیْ وَوَعَدَنِیْ فَوَفٰی لِیْ 'अबुल आस ने मुझसे बात की और सच कहा और मुझसे वायदा किया जिसे पूरा किया।' चुनांचे हज़रत अबुल आस ؓ के मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच जाने पर हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा हिजरत करके शफ़ीक़े दो जहां ﷺ के पास मदीना मुनव्वरा आ गईं।[1]

लेकिन हिजरत के वक़्त हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को यह दर्दनाक वाक़िआ पेश आया कि जब हिजरत के इरादे से निकलीं तो हब्बार बिन अस्वद और उसके एक और साथी ने उनको तक्लीफ़

1. इसाबा, उसदुल ग़ाबा

पहुंचाने का इरादा किया। चुनांचे एक ने उनको धक्का दे दिया जिसकी वजह से वह एक पत्थर पर गिर पड़ीं और ऐसी तक्लीफ़ पहुंची कि हमल (गर्भ) गिर पड़ा। यह तक्लीफ़ आख़िरी सांस तक चलती रही और यही उनकी मौत की वजह बनी।[1]

और कुछ किताबों में यों लिखा है कि हज़रत अबुल आस ने उनको मदीना मुनव्वरा जाने की इजाज़त दे दी और उनके रवाना होने से पहले ही शाम को रवाना हो गए। जब वह हिजरत के लिए घर से निकलीं तो हब्बार बिन अस्वद और उसके एक साथी ने उनको जाने से रोका और घर में वापस कर दिया। इसके बाद सैयदे आलम ﷺ ने उनको साथ लाने के लिए मदीना मुनव्वरा से आदमी भेजा, जिसके साथ वह मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले आईं। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को जो तक्लीफ़ पहुंची, उसके बारे में सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया, वह मेरी सबसे अच्छी बेटी थी, जो मेरी मुहब्बत में सताई गई।

हज़रत अबुल आस ؓ का मुसलमान होना

हिदायत अल्लाह के क़ब्ज़े में है। हज़रत अबुल आस ؓ का वाक़िया कितना सबक़ भरा है कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के ख़ास दोस्त भी हैं और दामाद भी। आंहज़रत ﷺ की साहबज़ादी घर में हैं, मगर मुसलमान नहीं होते। बीवी से इतनी मुहब्बत है कि मक्का के मुश्रिकों के ज़ोर देने पर भी तलाक़ नहीं देते। बद्र में क़ैद हुए और क़ैद से आज़ाद होकर बीवी को मदीना मुनव्वरा भेज दिया। मगर

1. अल-इस्तीआब

अभी तक इस्लाम क़ुबूल नहीं किया, फिर जब अल्लाह ने हिदायत दी तो बड़ी ख़ुशी से इस्लाम की गोद में आ गए।

इस्लाम लाने का वाक़िया यह है कि मक्का की जीत से कुछ पहले उन्होंने एक क़ाफ़िले के साथ शाम का तिजारती सफ़र किया। क़ुरैश के बहुत से माल आधे साझे पर तिजारत के लिए साथ ले गए। जब वापस हुए तो हुज़ूरे अक़्दस ﷺ का एक दस्ता, जिसके अमीर हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ﷺ थे, आड़े आया और उस दस्ते ने इस क़ाफ़िले का माल छीन लिया और कुछ लोगों को क़ैद कर लिया। हज़रत अबुल आस क़ैद में न आए बल्कि भाग कर मदीना मुनव्वरा चले गए और रात को हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास पहुंच कर पनाह मांगी। उन्होंने पनाह दे दी।

जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए, तो हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने ज़ोर से पुकार कर कहा कि اَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ اَجَرْتُ اَبَا الْعَاصِ بْنَ الرَّبِيْعِ 'ऐ लोगो! मैंने अबुल आस को पनाह दे दी है।' हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की तरफ़ मुतवज्जह होकर सवाल फ़रमाया, क्या आप लोगों ने सुना, ज़ैनब ने क्या कहा? लोगों ने कहा, जी हां, हमने सुना। उस मुंसिफ़ आदिल ﷺ पर हर दो आलम क़ुरबान, जिसने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का जवाब सुनकर फ़रमाया,

اَمَا وَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ مَا عَلِمْتُ بِذَالِكَ حَتّٰى سَمِعْتُهٗ كَمَا سَمِعْتُمْ

'क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, इस वक़्त से पहले मुझे भी पता नहीं था कि अबुल आस मदीना में हैं और उनको ज़ैनब ने पनाह दी है। मुझे इसकी जानकारी अभी इसी

वक़्त हुई है, जबकि तुम्हारे कान में ज़ैनब रज़ि० के एलान की आवाज़ पहुंची।' इसके बाद फ़रमाया कि मामूली मुसलमान भी किसी को पनाह दे दे तो सब मुसलमानों को उसका पूरा करना लाज़िम हो जाता है।

फिर यह फ़रमा कर आप हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास पहुंचे और उनसे फ़रमाया कि अबुल आस को अच्छी तरह रखना और मियां-बीवी वाले ताल्लुक़ को न होने देना, क्योंकि तुम उनके लिए हलाल नहीं हो। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया कि यह अपना माल लेने के लिए आए हैं। यह सुनकर सैयदे आलम ﷺ ने उस दस्ते को जमा किया, जिन्होंने उनका माल छीना था और फ़मराया कि उस आदमी (अबुल आस) का जो ताल्लुक़ हमसे है, उसे तो आप लोग जानते हैं और उसका माल तुम लोगों के हाथ लग गया है, जो तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ़ से इनायत है, क्योंकि दारुल हर्ब (वह मुल्क जिससे लड़ाई हो) के ग़ैर-मुस्लिम का माल है। मैं चाहता हूं कि आप लोग उसके साथ एहसान करें और जो माल उसका ले लिया है, वापस कर दें। लेकिन अगर तुम ऐसा न करो, तो मैं मजबूर नहीं कर सकता, इस माल के तुम ही हक़दार हो।

यह सुनकर सबने अर्ज़ किया कि हम उनका माल वापस कर देते हैं और फिर उस पर अमल किया और जो माल लिया था, वह सारा उनको वापस कर दिया। उस माल को लेकर वह मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचे और जिस जिसका जो हक़ उन पर वाजिब था, सब अदा कर दिया और उसके बाद कलिमा शहादत—

اَشْهَدُ اَنْ لاَّ اِلٰهَ اِلاَّ اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللهِ

'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह०' सच्चे दिल से पढ़ा और मक्का वालों से कहा (मैंने यहां पहुंचने की कोशिश इसलिए की और) मदीना में कलिमा पढ़ने के बजाए यहां कलिमा पढ़ा कि अगर वहीं इस्लाम क़ुबूल कर लेता तो लोग यह समझते कि हमारे माल मारने के लिए मुसलमान हो गया है। अब मैंने तुम्हारे तमाम हक़ अदा कर दिए हैं और इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसके बाद हज़रत अबुल आस ﷺ आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में मदीना मुनव्वरा चले गए और आंहज़रत ﷺ ने अपनी साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से दोबारा उनका निकाह फ़रमा दिया।[1]

छः साल के बाद हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अबुल आस ﷺ के निकाह में दोबारा आईं और उन ही के निकाह में वफ़ात पाई।[2] हज़रत अबुल आस ﷺ ने ज़िलहिज्जा सन् 12 हि० में वफ़ात पाई।[3]

औलाद

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से एक साहबज़ादा और एक साहबज़ादी ने जन्म लिया। साहबज़ादी का नाम उमामा था और साहबज़ादे का नाम अली था। जिस दिन मक्का जीता गया, आंहज़रत ﷺ के साथ सवारी पर जो अली सवार थे, वह यही अली

1. उसदुल ग़ाबा 2. उसदुल ग़ाबा 3. अल-इसाबा

बिन अबिल आस ﷺ हैं। उन्होंने बालिग़ उम्र के क़रीब पहुंचने पर आंहज़रत ﷺ की मौजूदगी ही में वफ़ात पाई। उनकी बहन हज़रत उमामा रज़ि० से आंहज़रत ﷺ को बड़ी मुहब्बत थी। एक बार कहीं से आपके पास एक हार आ गया था, उसके बारे में आपने फ़रमाया कि इसे अपने घर वालों में से उसको दूंगा जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब है। यह इर्शाद सुनकर औरतों ने समझ लिया कि बस अबूबक्र ﷺ की बेटी आइशा रज़ि० ही को मिलेगा, लेकिन आंहज़रत ﷺ ने हार हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा के गले में डाल दिया।[1]

हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हज़रत सैयदना अली ﷺ ने उनकी भांजी हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमा लिया था। उनको इसकी वसीयत हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने की थी। फिर हज़रत अली ﷺ की वफ़ात के बाद हज़रत नौफ़ुल बिन मुग़ीरह ﷺ से हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हुआ। उनसे यह्या नामी एक साहबज़ादे की विलादत हुई, लेकिन कुछ उलेमा ने यह भी कहा है कि न हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के निकाह में उनके पेट से कोई औलाद हुई, न हज़रत नौफ़ुल ﷺ के निकाह में।[2]

आंहज़रत ﷺ की नस्ल शरीफ़ सिर्फ़ हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से चली और किसी साहबज़ादी से आपकी नस्ल नहीं बढ़ी।[3]

---

1. अल-इसाबा 2. उसदुल ग़ाबा 3. अल-इसाबा

वफ़ात

हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने सन् 8 हि० में वफ़ात पाई।

आंहज़रत ﷺ ख़ुद उनकी क़ब्र में उतरे। उस वक़्त आपके चेहरे पर रंज व ग़म के निशान मौजूद थे। जब आप क़ब्र के ऊपर तशरीफ़ लाए, तो फ़रमाया कि मुझे ज़ैनब की कमज़ोरी का ख़्याल आ गया। मैंने अल्लाह से दुआ की कि क़ब्र की तंगी और उसकी घुटन से ज़ैनब को महफ़ूज़ फ़रमा दे। अल्लाह ने दुआ क़ुबूल फ़रमा कर आसानी फ़रमा दी।[1]

रज़ियल्लाहु तआला अन्हा व अरज़ाहा०

1. उसदुल ग़ाबा

हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा सैयदे आलम ﷺ की दूसरी साहबज़ादी हैं। इस पर सब एक राय हैं कि हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा सब साहबज़ादियों से बड़ी थीं। इनके बाद हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा पैदा हुईं। इन दोनों में आपस में कौन-सी बड़ी थीं। इसमें सीरत लिखने वालों में एक राय नहीं है, बहरहाल ये दोनों बहनें अपनी बहन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से छोटी थीं।

इन दोनों बहनों का निकाह अबू लहब के बेटों उत्बा और उतैबा से आंहज़रत ﷺ ने कर दिया था। हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह उत्बा से और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह उतैबा से हुआ था। अभी सिर्फ़ निकाह ही हुआ था, रुख़्सत न होने पाई थीं कि क़ुरआन मजीद की सूरः 'तब्बत यदा अबी ल-हब' تَبَّتْ يَدَا اَبِیْ لَهَبٍ उतरी, जिसमें अबू लहब और उसकी बीवी (उम्मे जमील) की बुराई की गई है और उनके दोज़ख़ में जाने की सूचना दी गई है। जब यह सूरः उतरी तो अबू लहब ने अपने बेटों से कहा कि मुहम्मद (ﷺ) की बेटियों को तलाक़ दे दो, वरना तुमसे मेरा कोई वास्ता नहीं। अबू लहब की बीवी उम्मे जमील ने भी बेटों से कहा कि ये दोनों लड़कियां (यानी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की साहबज़ादियां (अल-अयाज़ुबिल्लाह) बद-दीन हो गई हैं, इसलिए उनको तलाक़ दे दो। चुनांचे दोनों लड़कों ने मां-बाप के कहने पर

अमल किया और तलाक़ दे दी।[1]

हज़रत उस्मान ﷺ से निकाह

जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने अपनी साहबज़ादी हज़रत रुक़ैया रज़ि० का निकाह उत्बा से कर दिया, तो उसकी ख़बर हज़रत उस्मान ﷺ को लगी, वह उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे। इस ख़बर से उनको बहुत दुख हुआ और यह हसरत हुई कि काश! मेरा निकाह मुहम्मद (ﷺ) की साहबज़ादी रुक़ैया रज़ि० से हो जाता। यह सोचते हुए अपनी ख़ाला हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास पहुंचे और उनसे तज़्किरा किया। ख़ाला साहिबा ने उनको इस्लाम पर उभारा। वहां से चलकर हज़रत अबूबक्र ﷺ के पास आए और उनको अपनी ख़ाला की बातें बताईं, जो उन्होंने इस्लाम पर उभारते हुए कही थीं। हज़रत सिद्दीक़े अक्बर ﷺ ने उनकी बातों को सराहते हुए ख़ुद भी इस्लाम की दावत पेश की और फ़रमाया—

وَيحك يَا عُثْمَانُ اِنَّكَ لَرَجُلٌ حَازِمٌ اَيَخْفٰى عَلَيْكَ الْحَقُّ مِنَ الْبَاطِلِ هٰذِهِ الْاَوْثَانُ الَّتِىْ يَعْبُدُهَا قَوْمُكَ اَلَيْسَتْ حِجَارَةً صُمًّا لَا تَسْمَعُ وَلَا تُبْصِرُ وَلَا تَضُرُّ وَلَا تَنْفَعُ۔

'अफ़सोस ऐ उस्मान! (अब तक हक़ की दावत तुमने क़ुबूल नहीं की) तुम तो होशियार और समझदार आदमी हो, हक़ और बातिल को पहचान सकते हो। ये बुत, जिनको तुम्हारी क़ौम पूजती है, क्या

1. अल-इस्तीआब, भाग 4, पृ० 299, अल-इसाबा

गूंगे पत्थर नहीं हैं? जो न सुनते हैं, न देखते हैं, न नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न नुक़्सान।'

यह सुनकर हज़रत उस्मान ؓ ने जवाब दिया कि बेशक आपने सच कहा। ये बातें हो ही रही थीं कि सैयदे आलम ﷺ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को साथ लिए हुए तशरीफ़ लाए और हज़रत उस्मान ؓ ने आपके सामने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

इन्हीं दिनों में अबू लहब के बेटों ने आंहज़रत ﷺ की साहबज़ादियों को तलाक़ दे दी थी, इसलिए आंहज़रत ﷺ ने हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत उस्मान ؓ से कर दिया।[1] इससे मालूम होता है कि हज़रत रुक़ैया रज़ि० हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० से बड़ी थीं। दोनों को एक साथ तलाक़ हुई तो ज़ाहिरी तौर पर अक़्ल यही कहती है कि पहले बड़ी बेटी की शादी की होगी।'[2] (वल्लाहु आलम)

हब्शा की हिजरत

ज्यों-ज्यों मुसलमान बढ़ते जा रहे थे और इस्लाम अपनाने वालों के जत्थे में इज़ाफ़ा होता जाता था, मक्का के मुश्रिक इस्लाम और मुसलमानों को मिटाने की तदबीरें करते जा रहे थे। इन ज़ालिमों ने ख़ुदा-ए-वाहिद ला शरीक के परस्तारों को इतना सताया कि अपने दीन की सलामती और जान की हिफ़ाज़त के लिए इन लोगों को अपना वतन छोड़ना पड़ा। मुसलमानों की एक जमाअत वतन छोड़कर हब्शा को चली गई। इनमें हज़रत उस्मान ؓ भी थे।

---

1. अल-इसाबा 2. अल-इस्तीआब, उसदुल ग़ाबा

हज़रत उस्मान ﷺ ने अपनी बीवी बिन्त सैयदुल बशर हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा को साथ लेकर हब्शा को हिजरत की थी। जब हज़रत उस्मान ﷺ अपनी इज़्ज़तदार बीवी के साथ हब्शा को रवाना हुए, तो (कई दिन तक) आंहज़रत ﷺ को उनकी ख़ैर-ख़बर न मिली। आप इस फ़िक्र में मक्का मुअज़्ज़मा से बाहर जाकर मुसाफ़िरों से मालूम फ़रमाया करते थे। एक दिन एक औरत ने कहा कि मैंने उनको देखा है। उसका जवाब सुनकर आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह उनका साथी है। बेशक लूत ﷺ के बाद उस्मान ﷺ सबसे पहला मुहाजिर है, जिसने अपनी बीवी के साथ हिजरत की है।[1]

हब्शा को दोबारा हिजरत

इन दोनों के साथ कुछ मुसलमान मर्द-औरत और भी थे। जब ये लोग हब्शा पहुंच गए, तो वहां यह ख़बर मिली कि मक्का वाले मुसलमान हो गए हैं और इस्लाम को ग़लबा हो गया है। इस ख़बर से ये लोग बहुत ख़ुश हुए और अपने वतन को वापस लौटे, लेकिन मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर मालूम हुआ कि यह ख़बर ग़लत है और पहले से भी ज़्यादा तक्लीफ़ें मुसलमानों को दी जा रही हैं, यह सुनकर बहुत दुख हुआ। फिर इनमें से कुछ लोग वहीं से हब्शा को वापस हो गए।

पहली हिजरत के बाद एक बड़ी जमाअत ने, जिसमें 83 मर्द और 18 औरतें बताई जाती हैं, अलग-अलग हिजरत की। पहली हिजरत

1. उसदुल ग़ाबा,

हब्शा की 'हिजरते ऊला' और यह दूसरी हिजरत हब्शा की 'हिजरते सानिया' कहलाती है।

कुछ सहाबा ने हब्शा को दोनों हिजरतें कीं और कुछ ने सिर्फ़ एक हिजरत की। हज़रत उस्मान ؓ ने अपनी बीवी हज़रत रुक़ैया रज़ि० के साथ दोनों बार हब्शा को हिजरत की थी।

قَالَ فِيْ اُسُدِ الْغَابَةِ: وَهَاجَرَا كِلَاهُمَا اِلَى اَرْضِ الْحَبْشَةِ الْهِجْرَتَيْنِ ثُمَّ اِلٰى مَكَّةَ وَهَاجَرَا اِلَى الْمَدِيْنَةِ۔

मदीना मुनव्वरा को हिजरत

दूसरी बार दोनों हज़रात (हज़रत उस्मान और हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हुमा) हिजरत करके हब्शा तशरीफ़ ले गए, फिर वहां से मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले आए और इसके बाद मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा को हिजरत की।

قَالَ الْحَافِظُ فِي الْاِصَابَةِ: وَالَّذِىْ عَلَيْهِ اَهْلُ السِّيَرِ اَنَّ عُثْمَانَ رَجَعَ اِلٰى مَكَّةَ مِنَ الْحَبْشَةِ مَعَ مَنْ رَجَعَ ثُمَّ هَاجَرَ بِاَهْلِهٖ اِلَى الْمَدِيْنَةِ۔

औलाद

हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से सिर्फ़ एक साहबज़ादा पैदा हुआ, जिसका नाम अब्दुल्लाह रखा गया। उस साहबज़ादे की पैदाइश हब्शा में हुई थी। हज़रत उस्मान ؓ के एक साहबज़ादे का नाम इस्लाम से पहले अब्दुल्लाह था, उसकी वजह से अबू अब्दुल्लाह कुन्नियत थी। फिर जब हज़रत रुक़ैया

रज़ियल्लाहु अन्हा से साहबज़ादा पैदा हुआ, तो उसका नाम भी अब्दुल्लाह तज्वीज़ किया और अपनी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह बाक़ी रखी।[1]

उस साहबज़ादे ने छः वर्ष की उम्र पाई और जुमादल ऊला सन् 04 हि० में वफ़ात पाई। हज़रत सैयदे आलम ﷺ ने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और हज़रत उस्मान ؓ ने क़ब्र में उतारा। वफ़ात की वजह यह हुई कि एक मुर्ग़ ने उनकी आंख में ठोंग मार दी, जिसकी वजह से चेहरे पर वरम आ गया। मरज़ ने तरक़्क़ी की, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)[2]

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाद हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से कोई औलाद नहीं हुई।[3]

वफ़ात

हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा ने 02 हि० में वफ़ात पाई। यह बद्र की लड़ाई का ज़माना था। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ जब बद्र की लड़ाई के लिए रवाना हुए तो हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा बीमार थीं। उनकी देख-भाल के लिए आप हज़रत उस्मान ؓ को छोड़कर रवाना हुए और चूंकि आपके इर्शाद से उन्होंने बद्र की लड़ाई की शिर्कत से महरूमी मंज़ूर की थी, इसलिए आंहज़रत ﷺ ने उनको इस मुबारक लड़ाई में शरीक ही माना और ग़नीमत के माल में उनका हिस्सा भी लगाया।

जिस दिन हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ؓ जीत की ख़ुशख़बरी

1. अल-इस्तीआब, 2. उसदुल ग़ाबा, 3. अल-इसाबा

लेकर मदीना मुनव्वरा पहुंचे, उस दिन हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा ने वफ़ात पाई। अभी उनको दफ़न कर ही रहे थे कि अल्लाहु अक्बर की आवाज़ आई। हज़रत उस्मान ﷺ ने हाज़िर लोगों से पूछा कि यह तक्बीर कैसी है? लोगों ने तवज्जोह से देखा तो नज़र आया कि हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सैयदे आलम ﷺ की ऊंटनी पर सवार हैं और बद्र की लड़ाई से मुश्रिकों की हार और मुसलमानों की फ़त्ह की ख़ुशख़बरी लेकर आए हैं। हज़रत रुक़ैया रज़ि० के मुबारक जिस्म पर जलने वाले फफोले और घाव पड़ गए थे। इसी मरज़ में वफ़ात पाई।[1]

सैयदे कौनैन ﷺ बद्र की लड़ाई की शिर्कत और मश्गूलियत की वजह से उनके दफ़न में शरीक न हो सके थे। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही व इतरतिही व सह्बिही व बार-क व सल्ल-म०

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَعِتْرَتِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ

---

1. उसदुल ग़ाबा

हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा

जनाब सैयदे आलम ﷺ की तीसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। उनका उतैबा बिन अबी लहब से निकाह हुआ था। अभी रुख़्सती न होने पाई थी कि मां-बाप के कहने से उसने हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को तलाक़ दे दी। (जैसा कि पहले गुज़र चुका है।)

हज़रत रुक़ैया और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हुमा को एक साथ तलाक़ हुई थी। आंहज़रत ﷺ ने हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान رضي الله عنه से कर दिया और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह इसके बाद किसी से नहीं किया, यहां तक कि जब हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हो गई तो हज़रत उस्मान رضي الله عنه से हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह फ़रमा दिया। यह निकाह मदीना मुनव्वरा में हुआ। हज़रत उस्मान رضي الله عنه को यह ख़ास शरफ़ हासिल है कि उनके निकाह में एक के बाद दूसरी हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की दो साहबज़ादियां रहीं, इसीलिए उनको ज़ुन्नूरैन (दो नूर वाले) कहते हैं।

हिजरत

आंहज़रत ﷺ ने जब मदीना मुनव्वरा को हिजरत फ़रमाई थी, तो अपने घर वालों को मक्का मुअज़्ज़मा ही में छोड़ आए थे और आपके ख़ास साथी हज़रत अबूबक्र رضي الله عنه ने भी ऐसा ही किया था, फिर मदीना

मुनव्वरा पहुंच कर दोनों हज़रात ने आदमी भेजकर अपने-अपने कुंबे को बुलवा लिया। क़ाफ़िले में हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा भी थीं।[1]

हज़रत उस्मान ﷺ से निकाह

हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के कुछ दिनों बाद ही हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बेवा हो गई थीं, जो हज़रत उमर ﷺ की साहबज़ादी थीं। उनके शौहर हज़रत ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा ﷺ थे। जिहाद के मैदान में वह घायल हो गए, उसी के असर से वफ़ात पाई। हज़रत हफ़सा रज़ि० के निकाह के लिए हज़रत उमर ﷺ फ़िक्रमंद थे। उन्होंने इस बारे में हज़रत उस्मान ﷺ से तज़्किरा किया और उनसे कहा कि मेरी लड़की से तुम निकाह कर लो। उन्होंने कहा, अभी मेरा इरादा नहीं है। साथ ही हज़रत उमर ﷺ ने हज़रत अबूबक्र ﷺ से वही बात कही जो हज़रत उस्मान ﷺ से कही थी। हज़रत अबूबक्र ﷺ ख़ामोश हो गए और कुछ जवाब न दिया, जिसकी वजह यह थी कि हज़रत अबूबक्र ﷺ ने आंहज़रत ﷺ से सुना था कि आप हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाने का इरादा रखते हैं।

जब आंहज़रत ﷺ को यह मालूम हुआ कि हज़रत उमर ﷺ ने अपनी साहबज़ादी का निकाह उस्मान ﷺ से करना चाहा और वह ख़ामोश हो गए, तो आपने फ़रमाया, क्या उस्मान ﷺ के लिए ऐसी औरत न बता दूं जो उनके लिए हफ़सा से बेहतर है? और क्या

---

1. अल-इस्तीआब 12,

हफ़सा रज़ि० के लिए ऐसा शौहर न बता दूं जो उनके लिए उस्मान ؓ से बेहतर है? यह फ़रमा कर आंहज़रत ﷺ ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपने निकाह में ले लिया और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत उस्मान ؓ से कर दिया।[1]

हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हो गई तो आंहज़रत ﷺ ने हज़रत उस्मान ؓ को देखा कि ग़मगीन और रंजीदा हैं। आपने सवाल फ़रमाया कि मैं तुमको रंजीदा क्यों देख रहा हूं? उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! क्या मुझसे ज़्यादा किसी को मुसीबत पहुंची होगी? अल्लाह के रसूल (ﷺ) की साहबज़ादी जो मेरे निकाह में थीं, उनकी वफ़ात हो गई, जिससे मेरी कमर टूट गई और मेरा जो आपसे दामादी का रिश्ता था, वह नहीं रहा।

ये बातें हो ही रही थीं कि सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ उस्मान! लो यह जिब्रील आए हैं और अल्लाह की तरफ़ से मुझको हुक्म दे रहे हैं कि तुमसे तुम्हारी वफ़ात पाई बीवी की बहन उम्मे कुलसूम का उसी मह्र पर निकाह कर दूं जो तुम्हारी बीवी का था और तुम उसको इस तरह रखो जिस तरह ख़ुशगवारी के साथ उसकी बहन को रखते थे। यह कहकर आंहज़रत ﷺ ने हज़रत उम्मे कुलसूम का निकाह हज़रत उस्मान ؓ से कर दिया। यह निकाह रबीउल अव्वल सन् 03 हि० में हुआ और रुख़्सती जुमादस्सानी सन् 03 हि० में हुई। हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु

1. अल-इस्तीआब फ़ी ज़िक्रि हफ़सा रज़ि०

अन्हा ने छः वर्ष हज़रत उस्मान ؓ के निकाह में रहकर इंतिक़ाल किया और उनसे कोई औलाद नहीं हुई।[1]

वफ़ात

हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने सन् 09 हि० माह शाबान में वफ़ात पाई। हज़रत उम्मे अतीया रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अस्मा बिन्त अमीस रजि० और कुछ दूसरी सहाबियात ने उनको गुस्ल दिया और आंहज़रत ﷺ ने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई।[2]

हज़रत लैला बिन्त क़ानिफ़ रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं उन औरतों में से थी, जिन्होंने अल्लाह के रसूल ﷺ की बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को गुस्ल दिया। गुस्ल के बाद आंहज़रत ﷺ से कफ़न लेकर उनको हमने कफ़न दिया। कफ़न के कपड़े आपके पास थे। आप दरवाज़े के पास से हमको देते रहे।[3]

दफ़न के लिए जब जनाज़ा क़ब्र के क़रीब लाया गया, तो सैयदे आलम ﷺ ने हाज़िर लोगों से फ़रमाया कि क्या तुममें कोई ऐसा आदमी है जिसने रात (किसी औरत से) सोहबत न की हो?

हज़रत अबू तलहा ؓ ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! मैं ऐसा हूं। आपने फ़रमाया, तुम क़ब्र में उतर जाओ, चुनांचे वह क़ब्र में उतरे।

हज़रत अनस ؓ फ़रमाते हैं कि सैयदे आलम ﷺ की आंखों से

1. उसदुल ग़ाबा 2. उसदुल ग़ाबा और अल-इसाबा
3. अल-इस्तीआब

उस वक़्त आंसू जारी थे।[1]

हज़रत अबू तलहा ﷺ के साथ क़ब्र में उतारने में हज़रत अली ﷺ और हज़रत फ़ज़्ल ﷺ और हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी शरीक थे।[2]

हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात पर आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि अगर मेरी तीसरी लड़की (बे-ब्याही) होती तो मैं इसका निकाह भी उस्मान ﷺ से कर देता।[3]

हज़रत अली ﷺ से रिवायत है कि (इस मौक़े पर) सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि अगर मेरी 40 लड़कियां (भी) होतीं, तो एक के बाद दूसरी उस्मान ﷺ से निकाह करता जाता, यहां तक कि उनमें एक भी बाक़ी न रहती।[4] (रज़ियल्लाहु अन्हुम व अरज़ाहुम)

---

1. मिश्कात (बुख़ारी)
2. अल-इस्तीआब
3. उसदुल ग़ाबा
4. उसदुल ग़ाबा फ़ी ज़िक्रि उस्मान ﷺ

उत्बा और उतैबा का अंजाम

अबू लहब बदबख़्त के एक लड़के का नाम उत्बा और दूसरे का नाम उतैबा और तीसरे का मोतिब था। आंहज़रत ﷺ ने उत्बा से हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा का और उतैबा से हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह कर दिया था। फिर जब उनके मां-बाप ने उनसे कहा कि मुहम्मद (ﷺ) की लड़कियों को तलाक़ दे दो, तो दोनों ने तलाक़ दे दी, लेकिन फ़र्क़ यह हुआ कि हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा के शौहर ने तो सिर्फ़ तलाक़ ही दी और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा के शौहर ने तो तलाक़ भी दी और सैयदे आलम ﷺ के पास आकर आपसे गुस्ताख़ी और बेअदबी भी की और नामुनासिब लफ़्ज़ ज़ुबान से निकाले। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने उसको बद-दुआ दी और बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह! अपने फाड़ने वाले जानवरों में से एक जानवर को उस पर मुसल्लत फ़रमा, उस वक़्त अबू तालिब भी वहां मौजूद थे। वह बावजूद मुसलमान न होने के यह बद-दुआ सुनकर सहम गए और उस लड़के से कहा कि इस बद-दुआ से तुझे खलासी नहीं।

इसके बाद एक मौक़े पर अबू लहब एक क़ाफ़िले के साथ शाम के सफ़र में रवाना हुआ, उसके साथ यह लड़का भी था, जो आंहज़रत ﷺ की बद-दुआ ले चुका था। अबू लहब को आंहज़रत ﷺ से बड़ी दुश्मनी थी, मगर यह ज़रूर समझता था कि उनकी

बद-दुआ ज़रूर लग कर रहेगी, इसलिए क़ाफ़िले वालों से कहा कि मुझे मुहम्मद (ﷺ) की बद-दुआ की फ़िक्र है। सब लोग हमारी ख़बर रखें। चलते-चलते एक मंज़िल पर पहुंचे। वहां दरिंदे बहुत थे, इसलिए हिफ़ाज़ती तद्बीर के तौर पर यह इंतिज़ाम किया कि तमाम क़ाफ़िले का सामान एक जगह जमा करके एक टीला-सा बना दिया और फिर उसके ऊपर उतैबा को सुला दिया और बाक़ी तमाम आदमी उसके चारों तरफ़ सो गए।

अल्लाह के फ़ैसले को कौन बदल सकता है? तद्बीर नाकाम हुई और रात को एक शेर आया और सबके मुंह सूंघे और सबको छोड़ता चला गया, फिर इस ज़ोर से छलांग लगाई कि सामान के टीले पर जहां उतैबा सो रहा था, वहीं पहुंच गया और पहुंचते ही उसका सर तन से जुदा कर दिया। उसने एक आवाज़ भी दी, मगर साथ ही ख़त्म हो चुका था, न कोई मदद कर सका, न मदद का फ़ायदा हो सकता था।

وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُوْنَهُ مِنْ دُوْنِ اللهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا۔

कुछ तारीख़दानों ने लिखा है कि हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का शौहर मुसलमान हो गया था और यह वाक़िया दूसरे भाई के साथ पेश आया, (जिससे हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हुआ था) बहरहाल हज़रत रुक़ैया और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० के पहले शौहरों में से एक मुसलमान हुए और दूसरे के साथ यह वाक़िया पेश आया।

जमउलफ़वाइद में इस (शेर वाले) वाक़िए को उतैबा के बारे में

लिखा है और उसी को हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० का शौहर बताया है और यह भी लिखा है कि शाम को जाते हुए जब उस क़ाफ़िले ने ज़रक़ा नामी जगह में मंज़िल की तो एक शेर आकर उनके गिर्द फिरने लगा। उसको देखकर उतैबा ने कहा कि हाय-हाय यह तो मुझे खाके छोड़ेगा, जैसा कि मुहम्मद ने बद-दुआ दी थी। मुहम्मद ﷺ ने बैठे-बैठे मुझे यहां क़त्ल कर दिया, इसके बाद वह शेर चला गया और जब सब सो गए तो दोबारा आकर उसे क़त्ल कर दिया।

दलाइलुन्नुबूवत में भी इस वाक़िए को दर्ज किया गया है, मगर मक़्तूल का नाम उत्बा बताया है। सिलसिला-ए-बयान में यह भी लिखा है कि जब वह क़ाफ़िला शाम में दाख़िल हुआ तो एक शेर ज़ोर से बोला। उसकी आवाज़ सुनकर उस लड़के का जिस्म थरथराने लगा। लोगों ने कहा, तू क्यों कांपता है? जो हमारा हाल वही तेरा हाल, इतना डरने की क्या ज़रूरत है? उसने जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ) ने मुझे बद-दुआ दी थी, ख़ुदा की क़सम! आसमान के नीचे मुहम्मद (ﷺ) से सच्चा कोई नहीं। इसके बाद रात का खाना खाने के लिए बैठे तो डर की वजह से उस लड़के का हाथ खाने तक न गया।

फिर सोने का वक़्त आया, तो सब क़ाफ़िले वाले उसको घेरकर अपने बीच में करके सो गए और शेर बहुत मामूली आवाज़ से गुर्राता हुआ आया और एक-एक को सूंघता रहा, यहां तक कि उस लड़के तक पहुंच गया और उस पर हमला कर दिया। आख़िरी सांस लेते हुए उसने कहा कि मैंने पहले ही कहा था मुहम्मद (ﷺ) सबसे ज़्यादा

सच्चे हैं, यह कहकर मर गया। अबू लहब ने भी कहा कि मैं पहले समझ चुका था कि मुहम्मद (ﷺ) की बद-दुआ से इस लड़के को छुटकारा नहीं।[1]

लेकिन सही यही मालूम होता है कि यह वाक़िया उतैबा के साथ पेश आया, क्योंकि उत्बा के बारे में 'इसाबा' और 'इस्तीआब' और 'उसदुल ग़ाबा' में लिखा है कि वह मुसलमान हो गए थे। हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि इसाबा में लिखते हैं—

'जब आंहज़रत ﷺ फ़त्ह के मौक़े पर मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ़ लाए तो आपने अपने चचा हज़रत अब्बास رضي الله عنه से फ़रमाया कि तुम्हारे भाई (अबू लहब) के बेटे उत्बा और मोतिब कहां है? उन्होंने जवाब दिया, वे मक्का छोड़कर चले गए हैं। आपने फ़रमाया, उनको ले आओ। चुनांचे हज़रत अब्बास رضي الله عنه उनको अरफ़ात से जाकर ले आए। वे दोनों जल्द आ गए और इस्लाम क़ुबूल कर लिया। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया, मैंने अपने चचा के इन दोनों लड़कों को अपने रब से मांग लिया है। इसके बाद लिखा है कि—

उत्बा رضي الله عنه मक्का ही में रहे और वहीं वफ़ात पाई। हुनैन की लड़ाई के मौक़े पर ये दोनों भाई आंहज़रत ﷺ के साथ थे।

कितनी बड़ी महरूमी और बदबख़्ती है कि अबू लहब और ख़ुद उसका लड़का जान रहे हैं और दिल से मान रहे हैं कि मुहम्मद (ﷺ) से बढ़कर कोई सच्चा नहीं और उनकी बद-दुआ ज़रूर लगेगी और ख़ुदावंद आलम की तरफ़ से ज़रूर अज़ाब दिया जाएगा, मगर फिर भी दीने हक़ क़ुबूल करने और कलिमा-ए- इस्लाम पढ़ने को

1. दलाइलुन्नुबूवत, पृ० 163, एडीशन दाइरतुल मआरिफ़, हैदराबाद

तैयार न हुए। जब दिल में हठ और ज़िद बैठ जाती है तो अच्छा-ख़ासा समझदार इंसान बातिल पर जम जाता है और अक़्ल की रहनुमाई को क़ुबूल करने के बजाए नफ़्स का शिकार बनकर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नाराज़गी की तरफ़ चला जाता है।

اَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰی مِنْ شُرُوْرِ الْاَنْفُسِ وَتَسْوِيْلِ الشَّيٰطِيْنِ آمِيْن۔ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ۔

अआज़नल्लाहु तआला मिन शुरूरिल अनफुसि व तस्वीलिश शयातीनि आमीन या रब्बल आलमीन०

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा सैयदे आलम ﷺ को अपने घर वालों में सबसे ज़्यादा प्यारी थीं। उलेमा ने इनको आंहज़रत ﷺ की साहबज़ादियों में उम्र में सबसे छोटी बताया है। हज़रत आइशा रज़ि० से एक साहब ने मालूम किया कि आंहज़रत ﷺ को सबसे ज़्यादा महबूब कौन था? जवाब में फ़रमाया, फ़ातिमा। पूछने वाले ने दोबारा मालूम किया कि मर्दों में कौन ज़्यादा महबूब था? जवाब में फ़रमाया कि फ़ातिमा का शौहर।[1]

अल-इसाबा में लिखा है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की पैदाइश सैयदे आलम ﷺ की मुबारक उम्र के इक्तालीसवें साल में हुई। मदाइनी फ़रमाते हैं कि उनकी पैदाइश उस वक़्त हुई जबकि आंहज़रत ﷺ की उम्र 35 साल थी और उस वक़्त क़ुरैश काबा की तामीर में लगे हुए थे और सैयदे आलम ﷺ भी उनके साथ मशग़ूल थे।

जब सैयदे आलम ﷺ को रब की ओर से तब्लीग़ (प्रचार) का हुक्म हुआ और आपने अल्लाह के हुक्म से तौहीद की दावत देना शुरू कर दिया तो मक्का के क़ुरैश आपके दुश्मन हो गए और तरह-तरह से आपको सताने लगे। आपकी तक्लीफ़ से आपकी पाक बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और आपकी औलाद सभी को तक्लीफ़ पहुंचती और दुख होता था। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी कम उम्री में इन तक्लीफ़ों को सहती थीं।

---

1. अल-इस्तीआब,

एक बार सैयदे आलम ﷺ ने काबा शरीफ़ के क़रीब नमाज़ की नीयत बांध ली। वहीं क़ुरैश अपनी मज्लिसों में बैठे हुए थे कि उनमें से एक बदबख़्त[1] ने मज्लिस में हाज़िर लोगों से कहा कि बोलो, तुममें से कौन इस काम को कर सकता है कि फ़्लां ख़ानदान ने जो ऊंट ज़िब्ह किया है, उसकी ओझड़ी और ख़ून और लीद ले आवे और जब यह सज्दे में जाएं तो इनके कांधों के दर्मियान रख दे। यह सुनकर एक बदबख़्त उठा, जो उस वक़्त के हाज़िर लोगों में सबसे ज़्यादा बदबख़्त था। उसने ये सब गन्दी चीज़ें लाकर सैयदे आलम ﷺ के दोनों कांधों के दर्मियान रख दीं और आप सज्दे ही में रह गए। आपका यह हाल देखकर उन लोगों ने (बे-ख़ुद होकर) हंसना शुरू किया और इतना हंसे कि हंसी की वजह से एक दूसरे पर गिरने लगे।

किसी ने यह हालत देखकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को जाकर ख़बर दी। (उस वक़्त वह नव उम्र थीं)[2], ख़बर पाकर दौड़ी चली आईं और सैयदे आलम के मुबारक कांधों से उठाकर वह गन्दगी फेंक दी और उन लोगों को बुरा कहने लगीं। फिर जब सैयदे आलम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो आपने तीन बार बद-दुआ फ़रमाई। आपकी आदत थी कि जब कोई दुआ फ़रमाते तो तीन बार फ़रमाते थे और जब अल्लाह से सवाल करते थे, तो तीन बार सवाल करते थे। आपने एक तो क़ुरैश के लिए आम बद-दुआ की, اَللّٰهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ 'ऐ अल्लाह! तू क़ुरैश को सज़ा दे' और इसके बाद क़ुरैश के सरदारों का

1. जमउल फ़वाइद के मुताबिक़ वह अबू जह्ल था,
2. जमउल फ़वाइद

नाम लेकर हर एक के लिए अलग-अलग बद-दुआ फ़रमाई।[1]

ग़रज़ यह कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का बचपन दीन के लिए तक्लीफ़ें सहने में गुज़रा, यहां तक कि सैयदे आलम ﷺ ने क़ुरैश की तक्लीफ़ों से बचने के लिए मदीना मुनव्वरा को हिजरत फ़रमाई।

हिजरत

सैयदे आलम ﷺ ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ؓ को सफ़र का साथी बनाकर हिजरत की थी और अपने तमाम कुंबे को मक्का मुअज़्ज़मा ही में छोड़ गए थे। हज़रत सिद्दीक़े अक्बर ने भी आपकी पूरी पैरवी की और अपने बाल-बच्चों को छोड़कर आपके साथ चले गए। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब सैयदे आलम ﷺ ने हिजरत फ़रमाई तो हम दोनों बीवियों (हज़रत सौदा और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को और अपनी साहबज़ादियों को मक्का ही में छोड़कर तशरीफ़ ले गए और मदीना मुनव्वरा पहुंच कर जब आप कहीं ठहर गए तो ज़ैद बन हारिसा और अबू राफ़ेअ ؓ को दो ऊंट और पांच सौ दिरहम देकर मक्का भेजा ताकि हम सबको मदीना मुनव्वरा ले जाएं और हज़रत अबूबक्र ؓ ने भी इसी मक़्सद से दो या तीन ऊंट देकर आदमी भेजा और अपने बेटे अब्दुल्लाह ؓ को लिखा दिया कि सारे कुंबे को ले आओ। चुनांचे हज़रत सैयदे आलम ﷺ और सिद्दीक़े अक्बर ؓ के सब घर वालों ने एक साथ मदीना मुनव्वरा को हिजरत की। इस क़ाफ़िले में हज़रत फ़ातिमा रज़ि० और

1. बुख़ारी व मुस्लिम (मिश्कात)

उनकी बहन हज़रत उम्मे कुलसूम और उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा और उनके अलावा दूसरे लोग थे।

जिस वक़्त यह क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा पहुंचा, सैयदे आलम मस्जिद के आसपास अपने घर वालों के लिए हुजरे बनवा रहे थे। उन्हीं में आपने अपनी साहबज़ादियों और उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा को ठहरा दिया।

शादी

हिजरत के बाद सन् 02 हि० में सैयदे आलम ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه से हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह कर दिया। उस वक़्त सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 15 साल 5½ माह थी और हज़रत अली मुर्तज़ा की उम्र 21 साल 5 माह थी। (अल–इस्तीआब)

हज़रत अनस رضي الله عنه ने फ़रमाया कि पहले हज़रत अबूबक्र رضي الله عنه ने सैयदे आलम ﷺ को पैग़ाम दिया कि हज़रत सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ि० से मेरा निकाह फ़रमा दें, लेकिन आपने एराज़ फ़रमाया, फिर इनके बाद हज़रत उमर رضي الله عنه ने भी यही पैग़ाम दिया, लेकिन आपने उनके पैग़ाम से भी एराज़ फ़रमाया, (जबकि इन दोनों बड़ों को मालूम हो गया कि आप हमारे निकाह में न देंगे, तो दोनों ने हज़रत अली رضي الله عنه को राय दी कि तुम अपने लिए पैग़ाम दो। हज़रत अली رضي الله عنه का बयान है कि मुझे इन्हीं हज़रात ने इस चीज़ की तरफ़ तवज्जोह दिलाई जिससे में ग़ाफ़िल थ उनकी तवज्जोह दिलाने से मैं सैयदे आलम ﷺ

की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और निकाह का पैग़ाम दे दिया।[1]

मुस्नद इमाम अहमद में हज़रत अली ﷺ का वाक़िया ख़ुद उनकी ज़ुबानी नक़ल हुआ है कि जब मैंने सैयदे आलम ﷺ की साहबज़ादी के बारे में अपने निकाह का पैग़ाम देने का इरादा किया, तो मैंने (दिल में) कहा कि मेरे पास कुछ भी नहीं है, फिर यह काम कैसे होगा? लेकिन उसके बाद ही तुरन्त दिल में सैयदे आलम की सख़ावत और नवाज़िश का ख़्याल आ गया (और सोच लिया कि आप ख़ुद ही कुछ इंतिज़ाम फ़रमा देंगे, इसलिए मैंने ख़िदमत में हाज़िर होकर निकाह का पैग़ाम दे दिया। आपने फ़रमाया, तुम्हारे पास कुछ है? मैंने अर्ज़ किया, नहीं। फ़रमाया, वह ज़िरह कहां गई, जो मैंने तुमको फ़्लां दिन दी थी? मैंने अर्ज़ किया, जी हां, वह तो है। फ़रमाया, उसको (मह्र में) दे दो।

मवाहिब लदुन्निया में है कि हज़रत अली ﷺ ने फ़रमाया कि जब मैंने अपना पैग़ाम दिया तो सैयदे आलम ﷺ ने सवाल फ़रमाया कि कुछ तुम्हारे पास है? मैंने अर्ज़ किया, मेरा घोड़ा और ज़िरह है। फ़रमाया, तुम्हारे पास घोड़े का होना (जिहाद के लिए) ज़रूरी है, लेकिन ऐसा करो कि ज़िरह को बेच दो। चुनांचे मैंने वह ज़िरह चार सौ अस्सी दिरहम में बेच करके[2] रक़म आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दी और

---

1. ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब
2. ख़रीदने वाले हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ थे। उन्होंने ख़रीद कर ज़िरह वापस कर दी और रक़म और ज़िरह दोनों हज़रत अली ﷺ के पास रहीं। हज़रत अली ﷺ ने ज़िरह और रक़म दोनों सैयदे आलम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर कर दीं, तो आपने हज़रत उस्मान ﷺ को बड़ी दुआएं दीं। (ज़ुरकानी)

आपकी मुबारक गोद में डाल दी। आपने उसमें से एक मुट्ठी भरकर हज़रत बिलाल رضي الله عنه को दी और फ़रमाया कि ऐ बिलाल! जाओ इसकी ख़ुश्बू[2] हमारे लिए ख़रीद कर लाओ और साथ ही साथ जहेज़ तैयार करने का हुक्म दिया।

चुनांचे एक चारपाई और चमड़े का एक तकिया, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, तैयार किया गया। (रुख़सती के दिन) इशा की नमाज़ से पहले सैयदे आलम ﷺ ने सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ सैयदुस्सादात हज़रत अली मुर्तज़ा رضي الله عنه के घर भेज दिया। फिर नमाज़ के बाद ख़ुद उनके यहां तशरीफ़ ले गए और हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि पानी लाओ। चुनांचे वह एक प्याले में पानी लेकर आईं। आपने उस पानी से मुबारक मुंह में पानी लिया और फिर उस पानी से उनके सीने पर और सर पर छींटे दिए और अल्लाह के दरबार में दुआ की–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُعِیْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ط

'ऐ अल्लाह! मैं इसको और इसकी औलाद को मर्दूद शैतान की शरारत से महफ़ूज़ रखने के लिए आपकी पनाह में देता हूं।'

इसके बाद उनके दोनों कंधों के दर्मियान उस पानी के छींटे दिए, फिर अली رضي الله عنه से भी पानी मंगाया और उसमें कुल्ली करके उनके सर और सीने और दोनों कांधों के दर्मियान छींटे दिए और वही दुआ दी

1. मवाहिब ज़ुरक़ानी,

जो लख़्ते जिगर हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को दी थी। इसके बाद यह फ़रमा कर वापस तशरीफ़ ले आए कि 'बिस्मिल्लाहि वल ब-र-कति' بِسْمِ اللهِ وَالْبَرَكَةِ अपनी बीवी के साथ रहो-सहो।[1]

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के मशहूर ख़ादिम हज़रत अनस رضي الله عنه ने भी हज़रत सैयदना अली और सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा के निकाह की तफ़्सील नक़ल की है। वह फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ ने मुझसे फ़रमाया कि जाओ अबूबक्र और उमर और उस्मान और अब्दुर्रहमान और कुछ अंसार को बुला लाओ। चुनांचे मैं बुला लाया।

जब ये लोग आ गये और अपनी-अपनी जगह बैठ गए तो आंहज़रत ﷺ ने निकाह का ख़ुत्बा पढ़ा और उसके बाद फ़रमाया कि अल्लाह ने मुझे हुक्म फ़रमाया है कि अली رضي الله عنه से फ़ातिमा रज़ि० का निकाह कर दूं। तुम लोग गवाह हो जाओ कि मैंने चार सौ मिस्क़ाल चांदी[2] मह्र मुक़र्रर करके अली رضي الله عنه से फ़ातिमा रज़ि० का निकाह कर दिया, अगर अली رضي الله عنه इस पर राज़ी हों। उस वक़्त हज़रत अली رضي الله عنه मौजूद न थे। उसके बाद आंहज़रत ﷺ ने एक तबक़ में सूखी खजूरें

1. एक और रिवायत में है कि इस रक़म में से दो तिहाई ख़ुशबू में और एक तिहाई कपड़ों में ख़र्च करने के बारे में सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, ज़ुरकानी।
2. पहले गुज़रा है कि चार सौ अस्सी दिरहम में ज़िरह बेच करके, मह्र में उसकी क़ीमत हज़रत अली رضي الله عنه ने पेश कर दी और यहां 400 मिस्क़ाल चांदी का ज़िक्र है। दोनों रिवायतें इस तरह जमा हो सकती हैं कि 400 मिस्क़ाल चांदी के वज़न के चार सौ अस्सी दिरहम बनाए हुए हों। मौजूदा सिक्के के एतबार से किसी ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० का मह्र एक सौ सैंतीस रुपए और किसी ने एक सौ पचास रुपए समझ रखा है, हालांकि मह्र फ़ातिमी का ताल्लुक़ दिरहमों से है, रुपए से नहीं है।

(यानी छुहारे) मंगाए और मौजूद लोगो से फ़रमाया कि जिसके पास छुहारे पड़ें, ले ले। चुनांचे कुछ लोगों ने ऐसा ही किया, फिर उस वक़्त हज़रत अली ؓ पहुंच गए। उनको देखकर आंहज़रत ﷺ मुस्कराए और फ़रमाया कि बेशक अल्लाह ने हुक्म दिया कि तुमसे फ़ातिमा का निकाह चार सौ मिस्क़ाल चांदी मह्र मुक़र्रर करके कर दूं, क्या तुम इस पर राज़ी हो? उन्होंने अर्ज़ किया, जी, मैं राज़ी हूं, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ!

जब हज़रत अली ؓ ने रज़ामंदी ज़ाहिर कर दी तो आंहज़रत ﷺ ने दुआ देते हुए फ़रमाया—

جَمَعَ اللّٰهُ بَيْنَكُمَا وَاَعَزَّ جَدَّكُمَا وَبَارَكَ عَلَيْكُمَا وَاَخْرَجَ مِنْكُمَا كَثِيْرًا طَيِّبًا۔ [1]

'अल्लाह तुममें जोड़ रखे और तुम्हारा नसीबा अच्छा करे और तुम पर बरकत दे और तुमसे बहुत-सी और पाकीज़ा औलाद ज़ाहिर फ़रमाए।'

अल-इसाबा में लिखा है—

تَزَوَّجَ عَلِيٌّ فَاطِمَةَ فِيْ رَجَبَ سَنَةَ مَقْدَمِهِمِ الْمَدِيْنَةَ وَبَنٰى بِهَا مَرْجِعَهُمْ مِنْ بَدْرٍ وَّلَهَا يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَ عَشَرَةَ سَنَةً۔

'हज़रत अली ؓ ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रजब महीने में निकाह किया, जबकि हिजरत करके मदीना मुनव्वरा पहुंचे थे और रुख़्सती बद्र की लड़ाई से वापस होने पर हुई। उस वक़्त हज़रत सैयदा फ़ातिमा[2] रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 18 साल थी। इससे मालूम

---

1. मवाहिब लदुन्निया
2. इस्तीआब में है कि उस वक़्त उनकी उम्र 15 साल 5 माह थी, जैसा कि पहले गुज़र चुका है। रिवायत के इस इख़्तिलाफ़ से मक़्सद में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

होता है कि निकाह और रुख़्सती एक ही साथ न हुई थी।

जहेज़

अल-इसाबा में लिखा है कि आंहज़रत ﷺ ने जहेज़ में हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को एक बिछौना और एक चमड़े का तकिया, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी और दो चक्कियां और दो मश्कीज़े इनायत फ़रमाए। एक रिवायत में चार तकिए आए हैं और एक रिवायत में चारपाई का ज़िक्र है।[1] एक रिवायत में है कि उनकी रुख़्सती जिस रात को हुई, उनका बिस्तर मेंढे की खाल का था।[2] मुम्किन है कि हज़रत अली ؓ के घर का बिस्तर हो और यह भी हो सकता है कि यह भी जहेज़ में आंहज़रत ﷺ ने इनायत फ़रमाया हो।

वलीमा

हज़रत अली ؓ ने दूसरे दिन अपना वलीमा किया, जिसमें सादगी के साथ जो मयस्सर आया, खिला दिया, वलीमे में जौ (की रोटी), खजूरें, हरीरा, पनीर, मेंढे का गोश्त था।[3]

काम की तक़्सीम

हज़रत अली ؓ के पास कोई ख़ादिम (सेवक) नहीं था। घर का काम दोनों मियां-बीवी मिलकर कर लेते थे। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने उनका काम इस तरह बांट दिया था कि फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा

---

1. मवाहिब लुदन्निया मय शरह ज़ुरक़ानी 2. अत-तर्ग़ीब,
3. मवाहिब मय शरह

घर के अन्दर के काम किया करें (जैसे आटा गूंधना, पकाना, बिस्तर बिछाना, झाड़ू देना वग़ैरह) और अली ﷺ घर से बाहर के काम अंजाम दिया करें।[1]

औलाद

जब तक हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ज़िंदा रहीं, हज़रत सैयदना अली ﷺ ने दूसरा निकाह नहीं किया। आंहज़रत ﷺ की नस्ल हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से ही चली। आप (ﷺ) की औलाद में जो साहबज़ादे थे, वह बड़े होने से पहले ही अल्लाह को प्यारे हो गए थे और आपकी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा से तो कोई औलाद ही नहीं हुई और हज़रत रुक़ैया और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हुमा से जो औलाद हुई थी, उनसे भी नस्ल नहीं चली।[2] जिस क़दर भी सादात (सैयद लोग हैं, जिनके फ़ैज़ से पूरब व पश्चिम फ़ायदा उठा रहे हैं) सब हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की औलाद हैं। आंहज़रत ﷺ की यह ख़ास बात है कि आपकी साहबज़ादी से जो नस्ल चली, वह आपकी नस्ल समझी गयी, वरना आम क़ायदा यह है कि इंसान की नस्ल उसके बेटों से चलती है और बेटी से जो नस्ल चलती है वह उसके शौहर के बाप की नस्ल मानी जाती है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक मेरे अलावा अल्लाह ने जो भी नबी भेजा, उसकी औलाद उसकी पुश्त से हुई और मेरी औलाद

1. ज़ादुल मआद 2. उसदुल ग़ाबा

अल्लाह ने अली ﷺ की पुश्त से जारी फ़रमाई।[1] सबसे पहले हज़रत हसन ﷺ पैदा हुए। सैयदे आलम ﷺ ने उनका नाम हसन ﷺ तज्वीज़ फ़रमाया। ख़ुद ही उनके कान में अज़ान दी और अक़ीक़ा के दिन हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि उसके बालों के वज़न के बराबर चांदी सदक़ा कर दो। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वज़न किया तो एक दिरहम (चवन्नी भर) या उससे कुछ कम वज़न उतरा।

अबू दाऊद और नसई की एक रिवायत में है कि आंहज़रत ﷺ ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा दोनों का अक़ीक़ा फ़रमाया।[2]

हज़रत हसन ﷺ की पैदाइश रमज़ानुल मुबारक सन् 03 हि० में हुई और कुछ ने शाबान सन् 03 हि० भी उनकी पैदाइश बताई है, और कुछ उलेमा ने 04 हि० और कुछ ने 05 हि० उनकी पैदाइश बताई है, मगर पहली बात ही ठीक है।[3]

फिर अगले साल हज़रत हुसैन ﷺ की पैदाइश हुई। आंहज़रत ﷺ इन दोनों से बहुत मुहब्बत फ़रमाते थे। आपने फ़रमाया, ये दोनों दुनिया में मेरे फूल हैं।[4] और यह भी फ़रमाया कि ये दोनों जन्नत में जवानों के सरदार हैं।[5]

---

1. ज़ुरक़ानी फ़ी शरहुल मवाहिब
2. मिश्कात, बाब अक़ीक़ा, पृ० 362,
3. अल-इसाबा
4. मिश्कात (बुख़ारी)
5. मिश्कात शरीफ़,

हज़रत सैयदना अली ؓ से रिवायत है कि सीने से सर तक हज़रत हसन ؓ आंहज़रत ﷺ से मिलते-जुलते थे और हज़रत हुसैन रज़ि० सीने से नीचे- नीचे हुज़ूरे अक़्दस ﷺ से मिलते-जुलते थे।[1]

इन दोनों भाइयों के बाद तीसरे भाई हज़रत मुहस्सिन ؓ पैदा हुए। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने ही यह नाम तज्वीज़ फ़रमाया था। हज़रत अली ؓ फ़रमाते थे कि मैं अपनी कुन्नियत अबू हर्ब रखना चाहता था। जब हसन की पैदाइश हुई तो मैंने उसका नाम हर्ब[2] रख दिया। आंहज़रत ﷺ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, दिखाओ मेरा बेटा कहां है? तुमने उसका क्या नाम रखा? मैंने अर्ज़ किया, हर्ब रख दिया है। आपने फ़रमाया, नहीं, उसका नाम हसन है। फिर जब हुसैन की पैदाइश हुई, तो मैंने उसका नाम भी हर्ब तज्वीज़ कर दिया। आंहज़रत ﷺ तशरीफ़ लाए, और फ़रमाया कि दिखाओ, मेरा बेटा कहां है? उसका तुमने क्या नाम रखा? मैंने अर्ज़ किया, हर्ब नाम रख दिया है। आपने फ़रमाया, नहीं, वह हुसैन है। फिर जब तीसरा बच्चा हुआ तो उसका नाम भी मैंने हर्ब तज्वीज़ कर दिया। आंहज़रत ﷺ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, दिखाओ, मेरा बेटा कहां है? उसका तुमने क्या नाम रखा? मैंने अर्ज़ किया कि हर्ब नाम रख दिया है। फ़रमाया, नहीं, वह मुहस्सिन है। फिर फ़रमाया कि मैंने जो इनके नाम तज्वीज़ किए हैं, ये तीनों नाम हारून अलैहिस्सलातु वस्सलाम

---

1. मिश्कात शरीफ़
2. हर्ब का मतलब लड़ाई है। हज़रत अली ؓ बहादुर मर्द और निपटने वाले इंसान थे। उन्होंने चाहा कि किसी तरह मुझे अबू हर्ब कहा जाने लगे। इसलिए आपने हर बार बच्चों का नाम हर्ब रखा।

के (तीनों) बच्चों के नाम हैं। उनके एक बच्चे का नाम शब्बर, दूसरे का नाम शब्बीर, तीसरे का नाम मुशब्बर था।[1] (हसन, हुसैन, मुहस्सिन इनका तर्जुमा है।)

हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के तीसरे साहबज़ादे हज़रत मुहस्सिन ﷺ ने बचपन ही में वफ़ात पाई।[2]

हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से तीन साहबज़ादियां पैदा हुईं—

एक हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा, जिन्होंने बचपन में इंतिक़ाल फ़रमाया। इसी वजह से कुछ तारीख़ लिखने वालों ने उनको लिखा भी नहीं है।

दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। उनका पहला निकाह हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से हुआ था, जिनसे एक साहबज़ादे हज़रत ज़ैद ﷺ और एक साहबज़ादी हज़रत रुक़ैया रज़ि० पैदा हुईं। फिर हज़रत उमर ﷺ की वफ़ात के बाद हज़रत औन बिन जाफ़र ﷺ से निकाह हुआ और उनसे कोई औलाद नहीं हुई। फिर जब उनकी वफ़ात हो गई तो उनके भाई हज़रत मुहम्मद बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से निकाह हुआ। उनसे एक साहबज़ादी पैदा हुईं जो बचपन ही में वफ़ात पा गईं, फिर हज़रत मुहम्मद बिन जाफ़र ﷺ के इंतिक़ाल के बाद उनके भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से निकाह हुआ। उनसे भी कोई औलाद नहीं हुई और उन ही के निकाह में हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० की वफ़ात हुई और उसी दिन उनके साहबज़ादे हज़रत

1. अल-मवाहिब मय शरह 2. जमउल फ़वाइद व मुस्नद इमाम अहमद

ज़ैद ؓ की वफ़ात हुई, जो हज़रत उमर ؓ से पैदा हुए थे। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ि० की तीसरी साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि० थीं। उनका निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ؓ से हुआ था जिनसे दो साहबज़ादे अब्दुल्लाह और औन पैदा हुए। फिर जब हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हो गई तो अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने उनकी बहन हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० से निकाह फ़रमा लिया, जिसका ज़िक्र अभी गुज़रा। यह औलाद (तीन लड़के, तीन लड़कियां) हज़रत सैयदना अली ؓ की हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ि० से हुईं। इनके अलावा इनकी दूसरी बीवियों से जो बाद में उनके निकाह में आईं और भी औलाद हुईं। तारीख़ लिखने वालों ने हज़रत अली ؓ की तमाम औलाद की तायदाद 32 लिखी है, जिनमें 16 लड़के और 16 लड़कियां थीं। हज़रत हसन ؓ के 15 लड़के और 5 लड़कियां पैदा हुईं और हज़रत हुसैन ؓ के 6 लड़के, 3 लड़कियां पैदा हुईं।[1] रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम व अरज़ाहुम अजमईन व ज-अलना बिहदयिहिम मुत्तबईनल्लाहु तआला आलमु व अल्ल-म-हू अतम्मु व अह्कमु०

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَجْمَعِیْنَ وَجَعَلْنَا بِھَدِیِّھِمْ مُتَّبِعِیْنَ وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَعِلْمُہٗ اَتَمُّ وَاَحْکَمُ۔

---

1. हिकायाते सहाबा रज़ि०

सबक़ के लिए

हज़रत सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ की सबसे ज़्यादा प्यारी और चहेती साहबज़ादी थीं। उनको आंहज़रत ﷺ ने जन्नत की औरतों की सरदार बताया है। उनकी शादी किस सादगी से आंहज़रत ﷺ ने की, यह बहुत ग़ौर करने और ग़ौर करने के बाद अपनी औलाद की शादियां उसके मुताबिक़ करने की चीज़ है। आज लोग आंहज़रत ﷺ और आपके अह्ले बैत (अलैहिमुर्रहमत वर्रिज़वान) की मुहब्बत के बड़े दावे करते हैं, लेकिन उनकी पैरवी और पीछे चलने से अपनी और ख़ानदान की ज़िल्लत और रुसवाई समझते हैं। हज़रत अली رضي الله عنه ने निकाह का पैग़ाम दिया, आंहज़रत ﷺ ने क़ुबूल फ़रमा लिया। मंगनी के तमाम तरीक़े, जिनका आजकल रिवाज है, उनमें से कोई बखेड़ा भी न किया। ये तरीक़े बेकार और सुन्नत के ख़िलाफ़ हैं। फिर आंहज़रत ﷺ ने ख़ुद ही निकाह पढ़ाया। इससे मालूम हुआ कि बाप का लड़की के निकाह के वक़्त छिपे-छिपे फिरना, जिसका आजकल दस्तूर है, यह भी आंहज़रत ﷺ के तरीक़े के ख़िलाफ़ है। बेहतर यह है कि बाप ख़ुद अपनी लड़की का निकाह पढ़ दे। मह्र भी थोड़ा सा मुक़र्रर किया गया। हज़ारों रुपए मह्र में मुक़र्रर करना और वह भी फ़ख़्र और बड़ाई जताने के लिए और फिर अदा न करना, इसमें आंहज़रत ﷺ की पैरवी कहां है? जो लोग मह्र ज़्यादा बांध देते हैं और फिर अदा नहीं

करते, वे क़ियामत के दिन बीवी के क़र्ज़दारों में होंगे।

हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती इस तरह हुई कि हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ आंहज़रत ﷺ ने उनको दूल्हा के पास भेज दिया। यह दोनों जहान के बादशाह के साहबज़ादी की रुख़्सती थी, जिसमें न धूम-धाम, न म्याना, न पालकी, न रुपयों की बिखेर, न हज़रत अली رضي الله عنه घोड़े पर चढ़कर आए, न आंहज़रत ﷺ ने उनसे कमीनों का ख़र्च दिलवाया, न कुंबा-बिरादरी का खाना किया, न हज़रत अली رضي الله عنه ने बरात चढ़ाई, न आतिशबाज़ी के ज़रिए अपना माल फूंका, दोनों तरफ़ से सादगी बरती गई। क़र्ज़-उधार करके कोई काम नहीं किया। मुसलमानों को लाज़िम है कि सरदारे दो जहां ﷺ की पैरवी को न सिर्फ़ एतक़ाद से, बल्कि अमल से भी ज़रूरी समझें।

जहेज़ कितना मुख़्तसर था, इसकी तफ़्सील हम लिख चुके हैं, न आंहज़रत ﷺ ने किसी से क़र्ज़ उधार करके जहेज़ तैयार किया, न इसकी फ़ेहरिस्त लोगों को दिखाई, न जहेज़ की चीज़ों की नुमाइश की गई। हमको इसकी पैरवी लाज़िम है, अगर बेटी को कुछ दें तो गुंजाइश से ज़्यादा की फ़िक्र में न पड़ें और ज़रूरत की चीज़ें दें और दिखावा करके न दें, क्योंकि यह अपनी औलाद के साथ एहसान है, दूसरों को दिखला कर देना या फ़ेहरिस्त दिखाना सरासर शरीअत के ख़िलाफ़ और अक़्ल के ख़िलाफ़ है।

फिर आंहज़रत ﷺ ने दामाद और बेटी पर काम बांट दिया। अबू दाऊद शरीफ़ में है कि सरदारे दो जहां ﷺ की साहबज़ादी

चक्की ख़ुद पीसती थीं और हांडी ख़ुद पकाती थीं और झाड़ू ख़ुद देती थीं। आजकल की औरतें इसको ऐब समझती हैं, भला जन्नत की औरतों की सरदार से बढ़कर कौन इज़्ज़त वाली हो सकती है?

आजकल के मुसलमान कहलाने वाले मंगनी से लेकर शादी तक और फिर उसके बच्चों के पैदा होने और ख़त्ना और अक़ीक़ा तक फ़िज़ूल रस्में करते हैं, जिनमें बहुत-सी शिर्किया रस्में हैं और काफ़िरों से ली हैं और बहुत-सी रस्में सूदी रुपया लेकर अंजाम देते हैं और इन रस्मों को करने में नमाज़ें तक बर्बाद करते हैं और अनगिनत बड़े-बड़े गुनाहों के शिकार हो जाते हैं। अल्लाह हम सबको अपने पैग़म्बर ﷺ की पैरवी की तौफ़ीक़ बख़्शें।

हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में सैयदे आलम ﷺ का आना-जाना

हज़रत रसूले ख़ुदा ﷺ अल्लाह वाले भी थे और अल्लाह के बन्दों का हक़ अदा करने वाले भी, यानी अल्लाह से ताल्लुक़ व मुहब्बत और अल्लाह के ज़िक्र में भी पूरी तरह लगे रहते थे और मख़्लूक़ के हक़ों की अदाएगी और मेल-जोल में भी कोताही न फ़रमाते थे। आप चूंकि इंसानियत के मुअल्लिम थे, इसलिए आपकी ज़िंदगी सारी उम्मत के लिए नमूना है। आपकी ज़िंदगी से सबक़ मिलता है कि न तो इंसान को सरासर कुंबा व ख़ानदान की मुहब्बत में फंसकर अल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाना चाहिए और न बुज़ुर्गी के धोखे में कुंबे व ख़ानदान से कटकर अज़्कार व औराद को ज़िंदगी का मश्ग़ला बना लेना चाहिए। ऊंचा और कामिल मक़ाम यही है कि आंहज़रत ﷺ की पूरी-पूरी पैरवी करे

और ज़िंदगी के हर शोबे में आपकी पैरवी को ध्यान में रखे।

आंहज़रत ﷺ ने निकाह भी किए और आपके औलाद भी हुई, फिर साहबज़ादियों की शादियां भी कीं और उनकी शादियां कर देने के बाद भी उनकी ख़ैर-ख़बर रखी।

हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह जब आपने हज़रत सैयदना अली मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ से कर दिया, तो आप उस दिन रात को उनके पास तशरीफ़ ले गए और अक्सर जाते रहते थे और उनके हालात की ख़ैर-ख़बर रखते थे और उनके बच्चों को प्यार करते थे। एक बार हज़रत सैयदना अली और सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के दर्मियान आपस में कुछ रंजिश हो गई तो हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने उनके घर तशरीफ़ ले जाकर सुलह करा दी। इसके बाद बाहर तशरीफ़ लाए और हाज़िर लोगों में से किसी ने मालूम किया कि आप जब उनके घर दाख़िल हुए तो चेहरे पर कोई ख़ास ख़ुशी का असर न था और अब जबकि बाहर तशरीफ़ लाए हैं, तो चेहरे पर ख़ुशी की निशानियां हैं? आपने फ़रमाया, मैं क्यों ख़ुश न हूं जबकि मैंने अपने दो प्यारों के दर्मियान सुलह करा दी।[1]

एक बार आंहज़रत ﷺ हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए। वहां हज़रत अली رضی اللہ عنہ को मौजूद न पाया। साहबज़ादी से पूछा कि वह कहां हैं? अर्ज़ किया कि हमारी आपस में कुछ रंजिश हो गई थी, इसलिए वह गुस्से होकर चले गए और मेरे पास क़ैलूला[2] न किया। एक साहब से

1. इसाबा,
2. दोपहर को खाना खाकर सोने या लेट जाने को क़ैलूला कहते हैं।

आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया, देखना वह कहां हैं? उन्होंने जाकर तलाश किया और वापस आकर अर्ज़ किया कि वह मस्जिद में सो रहे हैं। आंहज़रत ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ ले गए, देखा कि वह लेटे हुए (सो रहे) हैं और उनके पहलू से चादर गिर गई है, जिसकी वजह से उनके जिस्म को मिट्टी लग गई है। आंहज़रत ﷺ मिट्टी पोंछने लगे और फ़रमाया, قُمْ اَبَا تُرَابٍ قُمْ اَبَا تُرَابٍ 'क़ुम अबा तुराब! क़ुम अबा तुराब' (ओ मिट्टी वाले! उठ, ओ मिट्टी वाले! उठ!)[1]

साहिबे फ़त्हुल बारी ने इस हदीस से कई मसले साबित किए हैं, जैसे—

(1) जो गुस्से में हो उससे ऐसा मज़ाक़ करना जिससे उनको मानूस किया जा सके, दुरुस्त है।

(2) अपने दामाद की दिलदारी और नाराज़ी दूर करना बेहतर अमल है,

(3) बाप अपनी बेटी के घर में बग़ैर दामाद की इजाज़त के दाख़िल हो सकता है, जबकि यह मालूम हो कि उसको बुरा न लगेगा।[2]

एक बार हज़रत सैयदे आलम ﷺ हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० भी साथ थे। वहां पहुंच कर हसन रज़ि० के बारे में सवाल फ़रमाने लगे कि क्या यहां छोटुआ है? क्या यहां छोटुआ है? इतने में हज़रत हसन रज़ि०

1. बुख़ारी शरीफ़
2. फ़त्हुल बारी, बाब नौमुर्रिजाल फ़िल मस्जिद

आ पहुंचे, यहां तक कि दोनों एक दूसरे से गले लिपट गए। उस वक़्त आंहज़रत ﷺ ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! मैं इससे मुहब्बत करता हूं, तू भी इससे मुहब्बत फ़रमा और जो इससे मुहब्बत करे, उससे भी मुहब्बत फ़रमा।[1] यह उस वक़्त की बात है जबकि हज़रत हसन ؓ छोटे-से थे।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत फ़रमाते हैं कि हमारे बचपन के ज़माने में, अल्लाह के रसूल ﷺ मुझको अपनी रान पर बिठाते थे और दूसरी रान पर हसन बिन अली ؓ को बिठा लेते थे और दोनों को चिमटा लेते थे और यों दुआ फ़रमाते थे—

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُمَا فَاِنِّىْ اَرْحَمُهُمَا

'अल्लाहुम-मर-हम-हुमा फ़-इन्नी अरहमुहुमा'[2]

(ऐ अल्लाह! इन दोनों पर रहम फ़रमा, क्योंकि मैं इन दोनों पर रहम करता हूं।)

कभी-कभी आंहज़रत ﷺ हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाते कि मेरे बेटों (यानी हज़रत हसन ؓ और हज़रत हुसैन ؓ) को लाओ। फिर आप उनको सूंघते और (सीने से) चिमटाते थे।[3]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद ؓ फ़रमाते थे कि एक बार रात को मैं एक ज़रूरत के लिए अल्लाह के रसूल ﷺ की ख़िदमत में पहुंचा, बाहर से अपने आने की ख़बर दी। आप चादर लपेटे हुए बाहर

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम (मिश्कात)
2. बुख़ारी 3. तिर्मिज़ी,

निकले। चादर में कुछ महसूस होता था। मैंने जब अपनी ज़रूरत पूरी कर ली तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! यह क्या है, जिसे आप लपेटे हुए हैं? आपने चादर खोल दी, तो मैंने देखा कि आपके एक कोले पर हसन और दूसरे कोले पर हुसैन हैं (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) आपने उस वक़्त फ़रमाया, ये मेरी औलाद हैं और मेरी साहबज़ादी की औलाद हैं और यह भी दुआ दी—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُحِبُّهُمَا فَاَحِبَّهُمَا وَاَحِبَّ مَنْ يُّحِبُّهُمَا

'अल्लाहुम-म इन्नी उहिब्बुहुमा फ़-अहिब्बहुमा व अहिब-ब मंय-युहिब्बुहुमा०'

(ऐ अल्लाह! मैं इनसे मुहब्बत करता हूं, पस तू भी इनसे मुहब्बत फ़रमा और जो इनसे मुहब्बत करे, उनसे भी मुहब्बत फ़रमा)

एक बार आंहज़रत ﷺ इस हाल में बाहर तश्रीफ़ लाए कि हज़रत हसन رضي الله عنه आपके मुबारक कंधे पर बैठे हुए थे।[1]

घरेलू हालात

हज़रत अली رضي الله عنه कोई मालदार आदमी नहीं थे। उनके यहां न सुख था, न आराम, न खाने-पीने की चीज़ों की बहुतात थी। घर में न सामान बहुत था, न घर उम्दा था, न कोई ख़िदमतगार था। आंहज़रत ﷺ ने जो हाल (फक़्र व फ़ाक़ा का) अपने लिए पसन्द किया, वही दामाद और बेटी के लिए पसन्द फ़रमाया था। एक बार हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! मेरे और

1. मिश्कात शरीफ़

अली ﷺ के पास सिर्फ़ एक मेंढे की खाल है, जिस पर हम रात को सोते हैं और दिन को उस पर ऊंट को चारा खिलाते हैं। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ मेरी बिटिया! सब्र कर, क्योंकि मूसा (ﷺ) ने दस वर्ष तक अपनी बीवी के साथ क़ियाम किया और दोनों के पास सिर्फ़ एक अबा थी।[1] (उसी को ओढ़ते और उसी को बिछाते थे।)

एक दिन आंहज़रत ﷺ हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा मौजूद न थे। आंहज़रत ﷺ ने मालूम किया कि मेरे बेटे कहां हैं? अर्ज़ किया आज इस हाल में सुबह हुई कि हमारे घर (खाने को तो क्या) चखने को (भी) कुछ न था, इसलिए (उनके वालिद जनाब) अली ﷺ उनको यह कहकर (बाहर) ले गए हैं कि घर में तुमको रो कर परेशान करेंगे। फ़्लां यहूदी के पास गए हैं, (ताकि कुछ मेहनत-मज़दूरी करके लावें) यह सुनकर आंहज़रत ﷺ ने भी उस तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और उनको तलाश फ़रमा लिया। वहां देखा कि दोनों बच्चे एक क्यारी में खेल रहे हैं और उनके सामने कुछ खजूरें पड़ी हैं।

आंहज़रत ﷺ ने हज़रत अली ﷺ से फ़रमाया, क्या मेरे इन बच्चों को घर नहीं ले चलते हो? गर्मी तेज़ होने से पहले-पहले ले चलो, उन्होंने अर्ज़ किया, इस हाल में आज सुबह हुई है कि हमारे घर में कुछ भी खाने, (बल्कि चखने) को न था, (इसलिए) इनको लेकर आया हूं। (अब मेरे और बच्चों के पेट में तो कुछ पहुंच गया,

1. शरह मवाहिब लदुन्निया

मगर फ़ातिमा रज़ि० के लिए (भी) कुछ खजूरें और जमा करनी हैं, थोड़ी-सी देर जनाब और तशरीफ़ रखें तो मैं फ़ातिमा रज़ि० के लिए (भी) कुछ खजूरें जमा कर लूं।

आंहज़रत ﷺ और ठहर गए, यहां तक कि कुछ खजूरें हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए जमा हो गईं। इन खजूरों को एक छोटे से कपड़े में बांधकर वापस हुए। एक बच्चे को सरवरे आलम ﷺ ने और दूसरे बच्चे को हज़रत अली मुर्तज़ा सैयदुस्सादात ﷺ ने गोद में लिया और इसी तरह घर पहुंचे।[1] वाक़िए के अन्दाज़ से मालूम होता है कि हज़रत सैयदना अली मुर्तज़ा ﷺ ने यहूदी के बाग़ में मज़दूरी करके अपने लिए और बच्चों के लिए और अपनी अहलिया मोहतरमा के लिए खजूरें हासिल की थीं।

आंहज़रत ﷺ के घर में भी फ़क्र व फ़ाक़ा रहता था और आपकी साहबज़ादी के घर में भी यही हाल था। जब कुछ मिल जाता, तो एक घर दूसरे घर की ख़बर लेता था। हज़रत सैयदना अली ﷺ फ़रमाते थे कि एक बार मेरे घर में कुछ न था जिसे मैं खा लेता और अगर आंहज़रत ﷺ के घर में कुछ होता तो मुझे पहुंच जाता, इसलिए मैं मदीना से बाहर एक तरफ़ को निकल गया और एक यहूदी के बाग़ की दीवार के बाहर से जो फट गई थी, अन्दर को झांका। बाग़ वाले यहूदी ने कहा कि ऐ आराबी! क्या चाहता है? मेरे बाग़ को पानी दे दे, अगर हर डोल पर एक खजूर लेना मंज़ूर हो? मैंने कहा, अच्छी बात है, दरवाज़ा खोल। चुनांचे उसने दरवाज़ा खोल दिया और मैंने पानी

1. अत-तर्ग़ीब वत-तर्हीब, भाग 5,

खींचना शुरू कर दिया। हर डोल पर वह मुझे एक खजूर देता जाता था। जब इतनी खजूरें हो गईं कि मेरी थैली भर गई तो मैंने कहा, बस, मुझे ये काफ़ी हैं। उनको खाकर और पानी पीकर मैं आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। आप उस वक़्त मस्जिद में सहाबा की एक जमाअत के साथ तशरीफ़ रखते थे।[1]

हज़रत अनस ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक बार आंहज़रत ﷺ को जौ की रोटी का एक टुकड़ा दिया। आपने फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा! तीन दिन से मैंने कुछ खाया-पिया नहीं। इतनी मुद्दत गुज़र जाने पर यह मुझे मिला है।[2]

एक बार आंहज़रत ﷺ हज़रत सिद्दीक़े अक्बर और फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी ﷺ के मकान पर पहुंचे। उन्होंने आपकी दावत की और एक बकरी का बच्चा ज़िब्ह करके सालन पकाया और रोटी तैयार की। आंहज़रत ﷺ ने एक रोटी में थोड़ा-सा गोश्त रखकर हज़रत अबू अय्यूब ﷺ को दिया कि यह फ़ातिमा को पहुंचा दो, उसको भी कई दिन से कुछ नहीं मिल सका। चुनांचे वह उसी वक़्त पहुंचा आए।

फ़ज़ीलतें

आंहज़रत ﷺ हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का दिल रखने का बहुत ज़्यादा ख़्याल फ़रमाते थे। एक बार आपने इर्शाद फ़रमाया कि—

1. अत-तर्ग़ीब वत-तर्हीब, भाग 5,
2. अत-तर्ग़ीब वत-तर्हीब, भाग 5,

فَاطِمَةُ بِضْعَةٌ مِنِّیْ فَمَنْ اَغْضَبَهَا اَغْضَبَنِیْ وَفِیْ رِوَایَةٍ یُرِیْبُنِیْ مَا اَرَابَهَا وَیُؤْذِیْنِیْ مَا اٰذَاهَا[1]

'फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है। जिसने उसे नाराज़ किया, उसने मुझे नाराज़ किया।'

दूसरी रिवायत में है कि आपने फ़रमाया, 'उसके रंज से मुझे रंज होता है और उसकी तक्लीफ़ से मुझे तक्लीफ़ होती है।'

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती थीं कि मैंने आंहज़रत ﷺ की आदत और सीरत व सूरत और बातचीत से इतना मेल किसी की आदत और सीरत और सूरत और बातचीत का नहीं देखा जितना हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का था। जब वह आपके पास आती थीं तो आप खड़े हो जाते थे और उनका हाथ चूमते थे और अपने पास बिठाते थे और जब आप उनके पास जाते थे तो वह भी खड़ी हो जाती थीं और आपका हाथ चूमती थीं और आपको एहतराम से बिठाती थीं।[2]

हज़रत सौबान रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ जब सफ़र में तशरीफ़ ले जाते तो सबसे आख़िर में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से मिलकर रवाना होते थे और जब वापस तशरीफ़ लाते थे तो सबसे पहले हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले जाते थे।[3]

एक बार आंहज़रत ﷺ ने हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु

1. मिश्कात शरीफ़, 2. मिश्कात शरीफ़,
3. मिश्कात शरीफ़,

अन्हा से फ़रमाया कि (जिस पर तुमको गुस्सा आए) अल्लाह को (भी उस पर) तुम्हारे गुस्से की वजह से गुस्सा आता है और (तुम जिससे राज़ी हो) अल्लाह (उससे) तुम्हारी रिज़ा की वजह से राज़ी होते हैं।[1]

हज़रत अली ؓ फ़रमाते थे कि मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ से सुना कि क़ियामत के दिन परदे के पीछे से एक एलान करने वाला एलान करेगा कि ऐ लोगो! अपनी आंखों को बन्द कर लो, फ़ातिमा बिन्त सैयदना मुहम्मद ﷺ गुज़र रही हैं।[2]

एक बार सैयदे आलम ﷺ ने हज़रत हसन-हुसैन और उनके मां-बाप (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के बारे में फ़रमाया कि जिनसे उनकी लड़ाई है, मेरी भी लड़ाई है और जिनसे उनकी सुलह है, मेरी भी सुलह है।[3]

हज़रत हुज़ैफ़ा ؓ फ़रमाते थे कि मैं आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने उस वक़्त फ़रमाया कि बेशक यह फ़रिश्ता है, जो ज़मीन पर आज की इस रात से पहले कभी नहीं नाज़िल हुआ। अपने रब से इजाज़त लेकर मुझे सलाम करने और यह बशारत देने के लिए आया है कि यक़ीनन फ़ातिमा जन्नत की औरतों की सरदार हैं और यक़ीनन हसन और हुसैन ؓ जन्नत के जवानों के सरदार हैं।[4]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ की हम सब बीवियां आपके पास थीं कि इस बीच में सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा आ गईं। उनकी रफ़्तार बस हू-बहू आंहज़रत ﷺ

1. उसदुल ग़ाबा 2. उसदुल ग़ाबा
3. मिश्कात शरीफ़ 4. मिश्कात शरीफ़

की रफ़्तार थी। जब उन पर आंहज़रत सरवरे आलम ﷺ की नज़र पड़ी तो आपने फ़रमाया, आओ बेटी! मरहबा, फिर आपने उनको बिठा लिया, इसके बाद चुपके से उनके कान में कुछ फ़रमाया, जिसकी वजह से वह बहुत ज़्यादा रोईं। जब आपने उनको बहुत ज़्यादा रंजीदा देखा तो दोबारा धीरे से (उनके कान में) कुछ फ़रमाया, वह अचानक हंसने लगीं। जब आंहज़रत ﷺ तशरीफ़ ले गए तो मैंने मालूम किया कि बताओ कि आंहज़रत ﷺ ने तुमसे धीरे से क्या फ़रमाया था? हज़रत सैयदा फ़ातिमा ने जवाब दिया कि अल्लाह के रसूल ﷺ के राज़ को मैं क्यों खोलूं? (सबसे फ़रमाने की बात होती तो आप धीरे से क्यों फ़रमाते?)

जब आंहज़रत ﷺ की वफ़ात हो गई तो मैंने सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि मेरा जो तुम पर हक़ है, उसके ज़ोर में पूछती हूं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने तुमसे क्या फ़रमाया था? हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया कि हां, अब बता सकती हूं। पहली बार जो आपने धीरे से फ़रमाया तो ख़बर दी थी कि जिब्रील हर साल मुझसे एक बार क़ुरआन मजीद का दौर करते थे और इस बार उन्होंने दो बार दौर किया है और मैं (इसलिए) समझता हूं कि दुनिया से मेरे कूच का वक़्त क़रीब आ गया है, इसलिए तुम अल्लाह से डरना और सब्र करना, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए पहले से जाने वालों में बहुत बेहतर हूं। यह सुनकर मैं रोने लगी। जब आपने मेरा रंज देखा तो दोबारा धीरे से कुछ फ़रमाया और उस वक़्त का फ़रमाना यह था कि क्या तुंम इस पर राज़ी नहीं हो कि तुम जन्नत की औरतों की सरदार होगी? या यह फ़रमाया कि मोमिन

औरतों में सबकी सरदार हो? दूसरी रिवायत में है कि पहली बार आपने धीरे से फ़रमाया कि मैं इसी मरज़ में वफ़ात पा जाऊंगा, इसलिए मैं रोने लगी। फिर दोबारा धीरे से फ़रमाया कि आपके घर वालों में सबसे पहले मैं ही आपसे जाकर मिलूंगी। यह सुनकर मुझे हंसी आ गई।[1]

दीनी तर्बियत

हज़रत सरवरे आलम ﷺ अल्लाह की तरफ़ से उम्मत की तर्बियत और नफ़्स के तज़्किए के लिए तशरीफ़ लाए थे। तर्बियत और तज़्किए में आप किसी का लिहाज़ नहीं फ़रमाते थे। अपनी बीवियों, औलाद और क़रीबी रिश्तेदारों सभी को अल्लाह से डराते और आख़िरत का फ़िक्रमन्द बनाते थे। जब आयत–

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ

'व अंज़िर अशीर-त-कल अक़रबीन०'

(आप अपने नज़दीकी रिश्तेदारों को डराइए।)

उतरी तो सैयदे आलम ﷺ ने अपने रिश्तेदारों और ख़ानदान वालों को आख़िरत के अज़ाब से डराया और क़बीलों और कुछ रिश्तेदारों का नाम लेकर फ़रमाया कि अपने आपको दोज़ख़ से बचाओ, मैं तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा। सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आपने इस मौक़े पर फ़रमाया कि ऐ क़ुरैश! अपने आपको दोज़ख़ से बचा लो। मैं अल्लाह के मामले में तुम्हारे कुछ काम न आऊंगा और बनी अब्दे मनाफ़ से भी यही फ़रमाया, फिर फ़रमाया कि ऐ

1. मिश्कात शरीफ़

अब्बास ﷺ! मैं अल्लाह के मामले में तुम्हारे कुछ काम न आऊंगा। (अपने को दोज़ख़ से बचाओ) ऐ सफ़िया रज़ि० जो अल्लाह के रसूल की फूफी हैं! मैं अल्लाह के मामले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा। अपने को दोज़ख़ से बचाओ। ऐ मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा रज़ि०! मेरे माल में से तुम जो चाहो सवाल कर लो, मैं अल्लाह के मामले में कुछ काम नही आऊंगा।[1] (अपने को दोज़ख़ से बचा लो।)

आंहज़रत ﷺ ने हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी कर देने के बाद भी दीनी तर्बियत का ख़ास ख़्याल रखा। हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं कि एक बार रात को आंहज़रत ﷺ मेरे और फ़ातिमा के पास तशरीफ़ लाए और हम दोनों को नमाज़ (तहज्जुद) के लिए जगाया, फिर अपने घर में तशरीफ़ ले गए और देर तक नमाज़ पढ़ी। हमारे उठने (और वुज़ू वग़ैरह करने) की कोई आहट न सुनी तो दोबारा तशरीफ़ लाए और मुझको जगाया और फ़रमाया, उठो, नमाज़ पढ़ो। मैं आंखें मलता हुआ बैठ गया और अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम! जितनी नमाज़ हमारे मुक़द्दर में है, वही तो हम पढ़ेंगे। हमारी जानें अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं। जब अल्लाह हमको बेदार करना चाहते हैं, बेदार फ़रमा देते हैं और थोड़ा-बहुत जो वक़्त मिलता है, पढ़ लेते हैं। यह सुनकर आंहज़रत ﷺ अपनी रान पर हाथ मारते हुए मेरे लफ़्ज़ों को

1. यानी ख़ुद नेक काम करो और अल्लाह के हुक्मों के ख़िलाफ़ न चलो। अल्लाह ने अज़ाब देना चाहा तो मैं नहीं छुड़ा सकूंगा। इसका मतलब सिफ़ारिश का इंकार नहीं है, बल्कि मक़सद अमल पर उभारना है और जिसकी सिफ़ारिश की जाए उसको भी तो सिफ़ारिश के लायक़ होना ज़रूरी है। जो मोमिन न होगा, उसकी तो सिफ़ारिश ही न होगी।

(ताज्जुब से) दोहराते हुए वापस हो गए और क़ुरआन मजीद की यह आयत पढ़ी—

وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ط

'व कानल इन्सानु अक-स-र शैइन ज-दला०'

(आदमी झगड़े में सबसे बढ़कर है।)[1]

हज़रत अली ﷺ से यह भी रिवायत है कि हज़रत सैयदा फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को मालूम हुआ कि सैयदे आलम ﷺ के पास कुछ गुलाम और बांदियां आई हैं, चूंकि उनको ख़ुद चक्की पीसना पड़ता था, इसलिए उनके हाथों में उसके निशान पड़ गए थे। इन निशानों को दिखाने और ख़िदमत के लिए बांदी या गुलाम तलब करने के लिए वह सैयदे आलम ﷺ की हरमसरा में पहुंचीं। आप तश्रीफ़ नहीं रखते थे, इसलिए वे अपनी बातें हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कह आईं। जब आंहज़रत ﷺ ज़नानख़ाना में तश्रीफ़ लाए तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने माजरा अर्ज़ कर दिया।

हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं कि यह सुनकर आप रात को हमारे पास तश्रीफ़ लाए। उस वक़्त हम दोनों लेट चुके थे। आपके आने पर हमने खड़े होने का इरादा किया। आपने फ़रमाया, अपनी जगह (लेटे) रहो। फिर आप मेरे और फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के दर्मियान बैठ गए और फ़रमाया, क्या तुमको मैं इससे बेहतर न बता दूं जो तुमने मुझसे सवाल किया है? जब तुम रात को सोने

1. मुस्नद अहमद

के लिए लेट जाओ तो 33 बार सुबूहानल्लाह और 33 बार अलहम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अक्बर पढ़ा करो। यह तुम्हारे लिए ख़ादिम से बेहतर होगा।[1]

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि सैयदे आलम ﷺ ने इस मौक़े पर इन तीनों चीज़ों को (फ़र्ज़) नमाज़ के बाद पढ़ने को भी फ़रमाया।[2]

हज़रत अली ؓ ने फ़रमाया कि जब से मैंने आंहज़रत ﷺ से यह अमल सुना, कभी नहीं छोड़ा। एक आदमी ने हज़रत अली ؓ से सवाल किया (जिसको इब्नुल कव्वा कहते थे) सिफ़्फ़ीन की लड़ाई की रात में भी आपने इसको पढ़ा, फ़रमाया, उस रात में भी मैंने नहीं छोड़ा। (शुरू रात में भूल गया था, फिर) सेहर के आख़िर में याद आया तो पढ़ लिया।[3]

इस सिलसिले में यह मज़्मून भी रिवायत किया गया है कि आंहज़रत ﷺ ने ख़ादिम अता फ़रमाने से बड़ी सख़्ती से इंकार फ़रमाया और यों फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! तुमको (ख़ादिम) नहीं दूंगा। यह कैसे हो सकता है कि तुमको दे दूं और सुफ़्फ़ा[4] में रहने

---

1. मिश्कात (बुख़ारी) 2. मिश्कात 3. अमलुलयौमि वल्लैलः
4. सुफ़्फ़ा वाले वे लोग थे जो दीने हक़ के लिए हिजरत करके मदीना मुनव्वरा आकर पड़ गए थे, न कारोबार करते थे, न उनका घर-बार था, भूख व प्यास को ग़िज़ा बनाकर दर्सगाहे नबवी (ﷺ) के तालिबे इल्म बनकर रहते थे और ज़िक्र व तालीम उनका मश्ग़ला था। मस्जिदे नबवी से बाहर एक सुफ़्फ़ा (यानी चबूतरा) सायबान डालकर इन लोगों की इक़ामत के लिए बना दिया गया था, इसलिए इनको सुफ़्फ़ा वाले कहा जाता है। इसके लिए अलग से किताब लेखक की है, उसे देखें।

वालों के पेट भूख से पेच खाते रहें और उन पर ख़र्च करने को मेरे पास कुछ भी न हो? ये गुलाम जो आते हैं, उनको बेच कर के सुफ़्फ़ा वालों पर ख़र्च करूंगा।[1]

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ अगर चाहते तो अपनी साहबज़ादी को एक गुलाम या बांदी दे देते, मगर आपने ज़रूरत को परखा और ख़ुदा की दी हुई समझ-बूझ ने आपको इसी पर तैयार किया कि सुफ़्फ़ा में रहने वाले मेरी बेटी से ज़्यादा ज़रूरतमंद हैं, किसी न किसी तरह दुख-तक्लीफ़ से मेहनत व मशक़्क़त करते हुए साहबज़ादी की ज़िंदगी गुज़र तो रही है, मगर सुफ़्फ़ा वाले तो बहुत ही बदहाल हैं, जिनको फ़ाक़े पर फ़ाक़े गुज़र जाते हैं, उनकी रियायत मुक़द्दम है और साहबज़ादी को ऐसा अमल बताया, जो आख़िरत में बे-इंतिहा अज्र व सवाब का ज़रिया बने। दुनिया की फ़ना होने वाली तक्लीफ़ आख़िरत के बे-इंतिहा इनामों से बे-इंतिहा कम है। इसी लिए आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि उनका पढ़ लेना तुम्हारे लिए ख़ादिम से बेहतर है।

अबू दाऊद शरीफ़ में है कि आंहज़रत ﷺ ने हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा! अल्लाह से डर और अपने रब का फ़रीज़ा अदा कर और अपने शौहर का काम अंजाम दे और सोते वक़्त 33 बार सुब्हानल्लाह और 33 बार अल-हम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अक्बर पढ़ लिया कर। ये गिनती में सौ हो गए जो तेरे लिए ख़ादिम से बेहतर हैं। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इसके जवाब में अर्ज़ किया कि

1. इसाबा (इब्ने साद)

में अल्लाह (की तक़्दीर) और उसके रसूल (की तज्वीज़) से राज़ी हूं। शायद इस मौक़े पर अल्लाह से डरने को इसलिए फ़रमाया कि ख़िदमत गुज़ार तलब करने को उनके ऊंचे दर्जे के ख़िलाफ़ समझा। वल्लाहु तआला आलम।

कुछ बुज़ुर्गों से सुना है कि सोते वक़्त उन चीज़ों को पढ़ लेना आख़िरत के अजूरों और दर्जों के दिलाने के साथ-साथ दिन भर की मेहनत व मशक़्क़त की थकन को दूर करने के लिए तजुर्बे में आ चुका है।[1]

हज़रत सौबान ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ जब सफ़र को तशरीफ़ ले जाते थे तो अपने घर वालों में सबसे आख़िरी मुलाक़ात हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाते थे और जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो सबसे पहले हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले जाते थे। एक बार एक लड़ाई से तशरीफ़ लाए और आदत के मुताबिक़ सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले जाने के लिए उनके घर पहुंचे। उन्होंने दरवाज़े पर (ज़ीनत के लिए उम्दा क़िस्म का) परदा लटका रखा था और दोनों बच्चों हज़रत हसन व हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को चांदी के कंगन पहना रखे थे।. . . आप अन्दर दाख़िल हुए, फिर वापस हो

1. लेखक से एक बुज़ुर्ग ने बयान फ़रमाया, जिन्होंने दीन ज़िंदा करने के लिए हज़ार मील का एक पैदल सफ़र किया था, इस सफ़र में मुझे इन तस्बीहों की क़द्र मालूम हुई और बुढ़ापे में इतना लम्बा सफ़र आसानी से तै हो गया। रात को जब इन तस्बीहों को पढ़ लिया तो दिन भर की थकन दूर हो गई।

गए। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने समझ लिया कि आप इस वजह से अन्दर तशरीफ़ नहीं लाए, इसलिए (उसी वक़्त) परदा हटा दिया और कंगन उतार लिए। दोनों बच्चे (इन कंगनों को लिए हुए) आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ की ख़िदमत में रोते हुए पहुंचे। आपने उनके हाथों से वे कंगन ले लिए और मुझसे फ़रमाया कि ऐ सौबान ؓ! (हदीस रिवायत करने वाले) जाओ फ़ातिमा रज़ि० के लिए एक हार असब[1] का और दो कंगन हाथी दांत के ख़रीद कर ले आओ। ये मेरे घर वाले हैं। मैं यह पसन्द नहीं करता हूं कि अपने हिस्से की अच्छी चीज़ें इस ज़िंदगी में खा लें[2] (या पहन लें।)

एक बार एक वाक़िया ऐसा ही पेश आया और वह यह कि हज़रत सैयदना अली ؓ के यहां एक आदमी मेहमान हुआ। उसके लिए खाना पकाया। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि आंहज़रत ﷺ को भी बुला लेते तो अच्छा था। चुनांचे आपको खाने की दावत दी और आप तशरीफ़ ले आए। दरवाज़े पर पहुंच कर चौखट को हाथों से पकड़ कर खड़े हो गए और देखा कि घर में एक तरफ़ एक नक़्शीन परदा लटका हुआ है। उसको देखकर आप वापस हो गए। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा

---

1. असब पट्ठे को कहते हैं। मुम्किन है कि उस ज़माने में हलाल जानवरों के पट्ठों से किसी क़िस्म का हार बना लेते हों। कुछ आलिमों ने कहा कि एक जानवर के दांत को भी असब कहते हैं। (मज्मउल बह्हार 3/605) में है कि यह एक समुंद्री जानवर का दांत है। (तारिक़)
2. मिश्कात, अहमद, अबू दाऊद

फ़रमाती हैं कि मैं आपके पीछे-पीछे चली और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! आपकी वापसी की वजह क्या हुई? आपने जवाब में फ़रमाया कि नबी के लिए यह दुरुस्त नहीं है कि सजावट और टीप-टाप वाले घर में दाख़िल हो।[1]

एक बार हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने (कमसिनी में) सदक़े के माल की खजूरों में से एक खजूर लेकर मुंह में रख ली। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने फ़ौरन मुंह से निकाल कर बाहर डालने को फ़रमाया और यह भी फ़रमाया, तुमको ख़बर नहीं कि हम सदक़ा नहीं खाते हैं।[2]

तर्बियत के सिलसिले का एक वाक़िया यह भी उसदुल ग़ाबा में नक़ल किया है कि एक बार हज़रत रसूले ख़ुदा ﷺ हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तश्रीफ़ ले गए। उस वक़्त हज़रत अली ؓ सो रहे थे। हज़रत हुसैन ؓ ने कुछ पीने को मांगा। वहीं इन हज़रात की एक बकरी थी। आंहज़रत ﷺ ने उसका दूध निकाला। अभी आपने किसी को दिया न था कि हज़रत हसन ؓ आपके पास पहुंच गए। आपने उनको हटा दिया। हज़रत सैयदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, इन दोनों में आपको वह दूसरा (यानी हज़रत हुसैन ؓ) ज़्यादा प्यारा है? आपने फ़रमाया, यह बात नहीं, असल बात यह है कि उस दूसरे ने इससे पहले तलब किया था। फिर फ़रमाया कि मैं और तुम और ये दोनों लड़के और यह सोने वाला क़ियामत के दिन एक साथ एक जगह होंगे।[3]

---

1. मिश्कात (अहमद व इब्ने माजा) 2. मिश्कात शरीफ़
3. मिश्कात शरीफ़

वफ़ात

हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सैयदे आलम ﷺ से छः माह बाद वफ़ात पाई। इस बारे में और भी क़ौल हैं, मगर सबसे ज़्यादा सही यही है। कुछ उलेमा ने कहा कि आपके बाद सत्तर दिन दुनिया में रहकर अल्लाह को प्यारी हुईं।[1] हज़रत नबी करीम ﷺ की वफ़ात पर उनको बहुत रंज हुआ और आपके बाद जब तक ज़िंदा रहीं, कभी हंसती न देखी गईं। आंहज़रत ﷺ ने उनको ख़बर दी थी कि मेरे घर में से सबसे पहले तुम ही मुझसे आकर मिलोगी। चुनांचे ऐसा ही हुआ। उनकी वफ़ात के वक़्त हज़रत अस्मा बिन उमैस रज़ियल्लाहु अन्हा वहीं मौजूद थीं, उनसे हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि यह मुझे अच्छा नहीं लगता कि औरत के जनाज़े को सिर्फ़ ऊपर से एक कपड़ा डालकर (मर्दों के जनाज़े की तरह) ले जाते हैं, जिससे हाथ-पांव का पता चल जाता है। हज़रत अस्मा रज़ि० ने फ़रमाया, मैं तुमको ऐसी चीज़ बताए देती हूं जो हब्शा में देखकर आई हूं। यह कहकर पेड़ की टहनियां मंगाकर एक मसहरी-सी बना दी और उस पर कपड़ा डाल दिया। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ि० ने इसको बहुत पसन्द किया और हज़रत अस्मा रज़ि० से फ़रमाया कि जब मैं वफ़ात पा जाऊं तो तुम और अली (رضی اللہ عنہ) मिलकर मुझको ग़ुस्ल देना और किसी को मेरे ग़ुस्ल में शिर्कत के लिए मत आने देना।

जब वफ़ात हो गई तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ग़ुस्ल देने के लिए आईं। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनको रोक दिया।

1. उसदुल ग़ाबा, इसाबा

उन्होंने हज़रत अबूबक्र ؓ से शिकायत की। हज़रत अबूबक्र ؓ तशरीफ़ लाए और हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि ऐ अस्मा रज़ि०! आंहज़रत ﷺ की बीवियों को आपकी साहबज़ादी के पास जाने से क्यों रोकती हो? उन्होंने जवाब दिया कि उन्होंने मुझको इसकी वसीयत की है। हज़रत अबूबक्र ؓ ने फ़रमाया कि अच्छा, उनकी वसीयत पर अमल करो, चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया, यानी हज़रत अली ؓ के साथ उनको गुस्ल दिया[1] और कफ़ना कर मसहरी में रख दिया। हज़रत सैयदना अली ؓ ने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और एक क़ौल यह भी है कि हज़रत अब्बास ؓ ने नमाज़ पढ़ाई। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वसीयत की थी कि मैं रात ही को दफ़न कर दी जाऊं, चुनांचे ऐसा ही किया गया और क़ब्र में हज़रत सैयदना अली ؓ और हज़रत सैयदना अब्बास ؓ और उनके साहबज़ादे फ़ज़्ल ؓ उतरे।

कहते हैं कि उनकी वफ़ात 3 रमज़ानुल मुबारक सन् 11 हि० को हुई। उस वक़्त उनकी उम्र 29 साल की थी और कुछ लोगों ने 30

---

1. हाफ़िज इब्ने हजर रह० इसाबा में लिखते हैं कि इब्ने फ़त्हून ने इसको परे समझ कर एतराज़ किया है कि हज़रत असमा रज़ि० उस वक़्त हज़रत अबूबक्र ؓ के निकाह में थीं, उनको हज़रत अली ؓ के साथ मिलकर गुस्ल देना कैसे दुरुस्त हुआ? और दूसरा एतराज़ हनफ़ी मज़हब की वजह से पेश आता है कि वफ़ात के बाद शौहर बीवी को गुस्ल नहीं दे सकता। (फ़तावा आलमगीरी) दोनों एतराज़ों का जवाब इस तरह हो सकता है कि मुम्किन है हज़रत अली ؓ परदा डालकर हज़रत अस्मा रज़ि० को पानी देते जाते हों और वह गुस्ल देती जाती हों और उन्होंने कोई और औरत अपने साथ मदद के लिए बुला ली हो। (वल्लाहु आलम)

साल और कुछ ने 35 साल बताई है। यह तमाम तफ़्सील उसदुल ग़ाबा में लिखी है।

अगर यह सही माना जाए कि हज़रत रसूले ख़ुदा ﷺ की उम्र के 35वें वर्ष उनका जन्म हुआ था तो 28-29 साल के दर्मियान उनकी उम्र होती है, जबकि उन की वफ़ात सन् 11 हि० को माना जाए और यही सही मालूम होता है। जिन्होंने 35 साल की उम्र बताई, उनके क़ौल की बुनियाद पर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जन्म आंहज़रत ﷺ की उम्र के 29 वर्ष में होना ज़रूरी हो जाता है, लेकिन यह किसी का क़ौल नहीं मालूम हुआ। अल-इस्तीआब में भी एक ऐसा वाक़िया लिखा है कि जिसमें 35 वर्ष वाला क़ौल रद्द क़रार पाता है।

मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल रह० में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है कि जिस मरज़ में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हुई, मैं उनकी तीमारदारी करती थी। एक दिन सुबह हुई तो मुझसे फ़रमाया कि ऐ मां! मेरे लिए गुस्ल का पानी रख दो। चुनांचे मैंने उसकी तामील की। फिर उन्होंने बहुत अच्छी तरह गुस्ल किया। इसके बाद मुझसे कपड़े तलब किए कि मेरे नए कपड़े दे दो। मैंने उसकी भी तामील की और उन्होंने मुझसे कपड़े पहन लिए, फिर मुझसे फ़रमाया कि मेरा बिस्तर बीच घर में बिछा दो। चुनांचे मैंने उसकी भी तामील की। इसके बाद वह क़िब्ला रुख़ होकर और अपना हाथ गाल के नीचे रखकर लेट गईं और मुझसे फ़रमाया कि ऐ मां! अब मेरी जान जाती है। मैंने गुस्ल कर लिया है, मुझे कोई न खोले। चुनांचे उसी वक़्त इंतिक़ाल फ़रमा गईं। हज़रत अली رضی اللہ عنہ उस वक़्त मौजूद न थे, बाहर से तशरीफ़ लाए तो मैंने उनको ख़बर कर

दी। उसदुल ग़ाबा में भी इस वाक़िए को (उम्मे सलमा के तज़्किरे में) ज़िक्र किया है, लेकिन उलेमा इसको सही नहीं मानते कि वफ़ात से पहले जो ग़ुस्ल किया था, उसको काफ़ी समझा गया, बल्कि सही यही है कि हज़रत अली और अस्मा बिन्त उमैस रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने वफ़ात के बाद ग़ुस्ल दिया। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने भी अल-इसाबा में इसको नामुम्किन कहा है कि वफ़ात से पहले जो ग़ुस्ल फ़रमा लिया था, उसे काफ़ी समझा गया हो।

जब तक हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ज़िंदा रहीं, हज़रत अली ﷺ ने दूसरा निकाह नहीं किया। जब उनकी वफ़ात हो गई, तो उन्हीं की वसीयत के मुताबिक़ उनकी भांजी हज़रत उमामा बिन्त ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा आंहज़रत ﷺ की तमाम औलाद आपकी मौजूदगी ही में फ़ौत हो गई थी। फिर आपके बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा भी जल्द ही आपसे जा मिलीं, रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहा।

वाक़िदी फ़रमाते थे कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन अबी मवाली से कहा कि लोग बयान करते हैं कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न की गईं, इस बारे में तुम क्या कहते हो? उन्होंने कहा कि वह हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब ﷺ के मकान के एक कोने में दफ़न की गईं। उनकी क़ब्र और रास्ते के दर्मियान सात हाथ का फ़ासला है[1], रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहा।

---

1. अल-इसाबा

हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه

इब्ने सैयदुल बशर सरवरे कौनैन ﷺ

सैयदे आलम ﷺ के एक साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه थे। यह हज़रत मारिया क़िब्तीया रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से पैदा हुए थे जो आंहज़रत ﷺ की बांदी थीं। सन् 06 हि० में जब सैयदे आलम ﷺ ने मुल्कों और इलाक़ों के हुक्मरानों को इस्लाम की दावत के ख़त लिखे, तो इसी सिलसिले में एक ख़त मुक़ौक़िस को भी लिखा। यह ईसाई मज़हब रखता था और मिस्र और स्कन्दरिया का बादशाह था। आंहज़रत ﷺ के ख़त की इबारत यह है—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ اِلَى الْمُقَوْقِسِ عَظِيْمِ الْقِبْطِ سَلَامٌ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى اَمَّا بَعْدُ فَاِنِّىْ اَدْعُوْكَ بِدِعَايَةِ الْاِسْلَامِ اَسْلِمْ تَسْلَمْ يُؤْتِكَ اللّٰهُ اَجْرَكَ مَرَّتَيْنِ فَاِنْ تَوَلَّيْتَ فَاِنَّ عَلَيْكَ اِثْمَ الْقِبْطِ يَا اَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَنْ لَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْئًا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ.

तर्जुमा— बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह व रसूलिहि की तरफ़ से,
मुक़ौक़िस के नाम जो क़िब्तियों का सरदार है।
सलाम उस पर जो हिदायत को मान ले।

इसके बाद ग़रज़ यह है कि मैं तुझको इस्लाम की दावत देता हूं, तू इस्लाम क़ुबूल कर ले। इसकी वजह से तू सलामत रहेगा और तुझे दोहरा अज्र अल्लाह देंगे और अगर तूने इस्लाम से मुंह मोड़ा, तो तुझ पर न सिर्फ़ अपने गुनाह का वबाल होगा, बल्कि तमाम क़िब्ती क़ौम की गुमराही तेरे ही सर पड़ेगी। (इसके बाद क़ुरआन मजीद की एक आयत लिखी, जिसका तर्जुमा यह है) ऐ अह्ले किताब! आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान मुसल्लम होने में बराबर है, यह है कि अल्लाह के अलावा हम किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएं और ख़ुदा को छोड़कर हममें से कोई किसी को रब क़रार न दे। फिर अगर वे लोग मुंह फेरें तो तुम कह दो कि तुम हमारे इस इक़रार के गवाह रहो कि हम तो मानने वाले हैं।'

इस ख़त को लेकर हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ ؓ ताजदारे दो आलम ﷺ के क़ासिद (दूत) बनकर रवाना हुए और मुक़ौक़िस को स्कन्दरिया पहुंच कर वह वाला नामा दे दिया। मुक़ौक़िस ने हज़रत हातिब ؓ का बहुत एज़ाज़ व इक्राम किया और ख़त खोलकर पढ़ा और पढ़ने के बाद हज़रत हातिब ؓ से मुख़ातब होकर कहा कि अगर वह नबी हैं तो क्यों मेरे हक़ में बद-दुआ नहीं कर दी, जिसके असर से मुझ पर ग़लबा पा लेते ?

हज़रत हातिब ने जवाब देते हुए फ़रमाया कि तुम (हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को तो मानते ही हो) बताओ उन्होंने अपने मुख़ालिफ़ों के लिए बद-दुआ करके क्यों ग़लबा न पा लिया?

मुक़ौक़िस ने फिर दोबारा यही सवाल किया, उन्होंने फिर वही

जवाब दिया, जिसकी वजह से मुक़ौक़िस चुप हो गया। उसकी ख़ामोशी से फ़ायदा उठाते हुए हज़रत हातिब ؓ ने तब्लीग़ जारी कर दिया और ख़ुद ही यों बोले—

إِنَّهُ قَدْ كَانَ قَبْلَكَ رَجُلٌ يَزْعُمُ أَنَّهُ الرَّبُّ الْأَعْلَى فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَى فَانْتَقَمَ مِنْهُ فَاعْتَبِرْ بِغَيْرِكَ وَلَا يَعْتَبِرَ غَيْرُكَ بِكَ

तर्जुमा—'तुझसे पहले एक आदमी था (यानी फ़िरऔन) जो अपने आपको सबसे बड़ा परवरदिगार कहता था। पस अल्लाह ने उसको आख़िरत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा और उससे बदला लिया गया, इसलिए तू दूसरों से सबक़ हासिल कर, ऐसा न हो कि (अल्लाह की तरफ़ से तेरी पकड़ हो) और दूसरे तुझसे सबक़ लें।'

यह सुनकर मुक़ौक़िस ने कहा कि हम एक दीन पर क़ायम हैं। उसको ऐसे ही दीन के लिए छोड़ सकते हैं जो हमारे मौजूदा दीन से बेहतर हो। इसके जवाब में हज़रत हातिब ؓ ने और ज़्यादा जमकर इस्लाम की दावत दी और फ़रमाया कि हम तुझको (तेरे दीन से बेहतर) दीन की तरफ़ दावत देते हैं। हमारी दावत अल्लाह के दीन की तरफ़ है, जिसके सामने दूसरे दीन की ज़रूरत नहीं है। बेशक यह नबी ﷺ, (जिनका क़ासिद बनकर मैं आया हूं, उन्हों) ने लोगों को इस्लाम की दावत दी, तो सबसे ज़्यादा तक्लीफ़ पहुंचाने पर मक्का के क़ुरैश तुल गए और यहूद ने सबसे ज़्यादा दुश्मनी पर कमर बांधी और नसारा सबसे ज़्यादा मुहब्बत[1] से पेश आने वाले साबित हुए (जो जल्द मुसलमान हो गए)।

1. सूरः माइदा की आयत 'ल-त-जि दन-न अशद्दन्नास'. . . (आख़िर तक) की तरफ़ इशारा है। आयत 12

बातों का सिलसिला जारी रखते हुए हज़रत हातिब رضي الله عنه ने फ़रमाया कि जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के आने की ख़ुशख़बरी दी, ऐसी ही ख़ुशख़बरी हज़रत ईसा عليه السلام ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के आने की दी थी। हम तुझको दावत इस तरह देते हैं जैसे तू तौरात वालों को इंजील की दावत देता है। पस जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम और उनकी लाई हुई तौरात शरीफ़ को हक़ मानते हुए हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम और उनकी लाई हुई इंजील की दावत देते हो, उसी तरह हम भी तुमको यही दावत देते हैं कि पिछले नबियों और अल्लाह की किताबों को हक़ मानते हुए अब इस मौजूदा पैग़म्बर ﷺ और उसकी लाई हुई किताब की पैरवी करो।

यह क़ायदा रहा है कि जो नबी किसी क़ौम में आया, वह क़ौम उसकी उम्मते दावत हो गई और उनके ज़िम्मे उस नबी का मानना और पैरवी करना ज़रूरी हो गया, इसलिए अब जबकि तूने उस आख़िरी पैग़म्बर (ﷺ) का ज़माना पा लिया तो उनकी पैरवी कर और यह बात भी साफ़ कर देना ज़रूरी है कि हम तुझको ईसाई मज़हब के ख़िलाफ़ दूसरे दीन पर आमादा नहीं कर रहे हैं, बल्कि ईसाई मज़हब की एक बात पर अमल करने को कह रहे हैं, (और वह बात यह है कि) हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने बाद पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां के आने की ख़बर दी थी और उनका नाम अहमद बताया था। चुनांचे वह तशरीफ़ लाए, अब हज़रत ईसा عليه السلام के फ़रमान के मुताबिक़ उनकी पैरवी करो।

ये बातें सुनकर मुक़ौक़िस ने कहा कि मैंने उस पैग़म्बर (आख़िरुज़्ज़मां

ﷺ) के बारे में ग़ौर किया तो मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि वह जिस चीज़[1] के करने का हुक्म फ़रमाते हैं, वह अक़्ल और तबियत के ख़िलाफ नहीं है और जिस चीज़ से मना फ़रमाते हैं, अक़्ल और सूझ-बूझ के एतबार से करने की नहीं। मैंने जहां तक ग़ौर किया, उससे यह समझा, वह न जादूगर हैं, न राह से भटके हुए हैं, न काहिन हैं, न झूठे, उनके बारे में जो जानकारियां मिलीं, उनसे पता चला कि वह ग़ैब की बातों की ख़बर देते हैं। यह उनके नबी होने की निशानी है और उनकी पैरवी करने के सिलसिले में ग़ौर करूंगा। इसके बाद सैयदे आलम ﷺ के ख़त को हिफ़ाज़त से रखने के लिए ख़ादिम को दे दिया, कातिब को बुलाया जो अरबी जानता था और आंहज़रत ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में नीचे लिखी बातें भेजने के लिए लिखवाई—

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ لِمُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ مِنَ الْمُقَوْقِسِ عَظِيْمِ الْقِبْطِ سَلَامٌ عَلَيْكَ اَمَّا بَعْدُ فَقَدْ قَرَأْتُ كِتَابَكَ وَفَهِمْتُ مَا ذَكَرْتَ فِيْهِ وَمَا تَدْعُوْ اِلَيْهِ وَقَدْ عَلِمْتُ اَنَّ نَبِيًّا قَدْ بَقِيَ وَكُنْتُ اَظُنُّ اَنْ يَّخْرُجَ مِنَ الشَّامِ وَقَدْ اَكْرَمْتُ رَسُوْلَكَ وَبَعَثْتُهُ اِلَيْكَ بِجَارِيَتَيْنِ لَهُمَا مَكَانٌ مِنَ الْقِبْطِ عَظِيْمٌ وَكِسْوَةٍ وَاَهْدَيْتُ اِلَيْكَ بَغْلَةً لِتَرْكَبَهَا وَالسَّلَامُ.

तर्जुमा—शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। यह ख़त है मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) के नाम,

---

1. हज़रत हातिब رضي الله عنه के पहुंचने से पहले मुक़ौक़िस को सैयदे आलम ﷺ के बारे में कुछ जानकारियां थीं, उन्हीं की बुनियाद पर ये बातें कीं।

मुक़ौक़िस की ओर से जो क़िब्तियों का सरदार है, तुम पर सलाम हो, सलाम के बाद अर्ज़ हो कि मैंने आपका ख़त पढ़ा और जो कुछ आपने ज़िक्र फ़रमाया है और जिस चीज़ की आपने दावत दी है, उसको समझा। मुझे पहले से मालूम था कि एक नबी का आना बाक़ी है, लेकिन मेरा ख़्याल था कि वह शाम देश में तशरीफ़ लाएंगे, (हिजाज़ में तशरीफ़ लाने के बारे में सोच भी नहीं सकता था) मैंने आपके क़ासिद का एज़ाज़ व इक्राम किया और उसके साथ आपकी ख़िदमत में दो बांदियां हदिए के तौर पर (मारिया और सीरीं) भेज रहा हूं, जो क़िब्त क़ौम में अपना एक मक़ाम रखती हैं, साथ ही कपड़े भी भेज रहा हूं और एक ख़च्चर भी आपकी सवारी के लिए ख़िदमत में भेज रहा हूं।—वस्सलाम

यह तमाम तफ़्सील 'मवाहिब लदुन्निया' में लिखी है और उसके बाद भी यह लिखा है कि मुक़ौक़िस ने सैयदे आलम ﷺ का ख़त पहुंचने पर बस यही किया कि आपकी तारीफ़ की और अपने एक ख़त के बाद ऊपर लिखी बातें हदिए के तौर पर भेज दीं। अलबत्ता इस्लाम क़ुबूल नहीं किया।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने अल-इसाबा में हज़रत मारिया रज़ि० के तज़्किरे में लिखा है कि मुक़ौक़िस ने सन् 07 हि० में मारिया और उनकी बहन सीरीन और हज़ार मिस्क़ाल सोना और बीस थान कपड़ा और एक ख़च्चर (जिसे दुलदुल कहते थे) और एक गधा जिसे अफ़ीर या याफ़ूर कहा जाता था और एक मर्द बूढ़ा जो ख़सी था और मारिया का भाई था, आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में हज़रत हातिब ؓ के साथ हदिए के तौर पर भेजा। (रास्ते में) हज़रत हातिब ने हज़रत मारिया

और उनकी बहन सीरीन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को इस्लाम पर उभारा, चुनांचे वे मुसलमान हो गईं, लेकिन वह बड़े मियां उस वक़्त मुसलमान न हुए। बाद में उन्होंने सैयदे आलम ﷺ के ज़माने ही में मदीना मुनव्वरा में इस्लाम क़ुबूल किया।[1]

जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ तक ये चीज़ें पहुंच गईं तो आपने हज़रत मारिया रज़ियल्लाहु अन्हा को अपने पास रख लिया और उनकी बहन सीरीं रज़ियल्लाहु अन्हा को हदिए के तौर पर हज़रत हस्सान ﷺ को दे दी। हज़रत इब्राहीम ﷺ जो हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के साहबज़ादे थे, हज़रत मारिया रज़ियल्लाहु अन्हा से पैदा हुए। उनका जन्म ज़ुलहिज्जा सन् 08 हि० में मदीना मुनव्वरा से कुछ दूर एक बस्ती में हुआ, (जिसे आलिया कहते थे) हुज़ूरे अक़्दस ﷺ उनके जन्म से बहुत ख़ुश हुए और सातवें दिन अक़ीक़ा फ़रमाया और उनके बालों के बराबर चांदी सदक़ा की और दूध पिलाने के लिए हज़रत उम्मे सैफ़ रज़ियल्लाहु अन्हा के सुपुर्द किया। उनके शौहर अंसारी थे जो लोहार का काम करते थे।[2]

हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते थे कि मैंने किसी को बाल-बच्चों के साथ रहमत व मुहब्बत का बर्ताव करने में आंहज़रत ﷺ से बढ़कर नहीं देखा। आपके साहबज़ादे दूध पीते इब्राहीम (ﷺ) मदीना मुनव्वरा से दूर एक बस्ती में दूध पीते थे। आप वहां तशरीफ़ ले जाया करते थे और हम आपके साथ होते थे। जिन साहब की बीवी दूध पिलाती थीं, वह लोहार का काम करते थे। भट्टी गर्म होने की वजह

1. अल-इसाबा,
2. उसदुल ग़ाबा व अल-इसाबा

से घर धुएं से भर जाता था और आप उसी धुएं में जाकर बैठ जाते थे और बच्चे को लेकर चूमते थे।[1]

हज़रत अनस رضي الله عنه इसी सिलसिले का एक वाक़िया यह भी बयान फ़रमाते थे कि एक बार आंहज़रत ﷺ अपने बच्चे इब्राहीम (رضي الله عنه) को देखने के लिए तशरीफ़ ले चले। मैं भी साथ हो लिया। जब उन साहब के क़रीब पहुंचे, जिनकी बीवी साहबज़ादे को दूध पिलाती थी, तो (मैंने देखा) वह भट्टी गर्म कर रहे हैं और सारा घर धुएं से भरा हुआ है। मैं जल्दी से अल्लाह के रसूल ﷺ से आगे बढ़ा और उन साहब से कहा, ऐ अबू सैफ़! ज़रा ठहरो, अल्लाह के रसूल ﷺ तशरीफ़ लाए हैं। मेरे तवज्जोह दिलाने से उन्होंने भट्टी धौंकना छोड़ दिया। वहां पहुंच कर आंहज़रत ﷺ ने बच्चे को मंगा कर चिमटा लिया और (उस वक़्त के मुनासिब प्यार व मुहब्बत में) अल्लाह के चाहे के मुताबिक़ (बहुत कुछ) फ़रमाया।[2]

हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه ने 16 या 17 माह की उम्र पाकर वफ़ात पाई।[3]

वाक़िदी रह० ने उनकी उम्र 18 महीने और कुछ उलेमा ने 16 महीने और 18 दिन बताया है।[4]

हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की वफ़ात के वक़्त सैयदे आलम ﷺ वहीं मौजूद थे। उनकी आख़िरी सांस चल रही थी कि सैयदे आलम ﷺ की आंखों से आंसू जारी हो गए। उस वक़्त हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رضي الله عنه भी हाज़िर थे। उन्होंने (आंहज़रत ﷺ की मुबारक

---

1. मुस्लिम शरीफ़,
2. मुस्लिम शरीफ़,
3. इमाम नववी की शरह मुस्लिम
4. उसदुल ग़ाबा

आंखों से आंसू जारी होने को ताज्जुब से देखा और उनके दिल में ख़्याल आया कि एक तो आप रोने से मना फ़रमाते हैं और यों भी आप ख़ुदा के मुक़र्रब हैं। आपको दुनिया की नेमत चले जाने पर रोना क्यों आया (यह सोचकर) सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! आप भी रोते हैं? आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ औफ़ के बेटे! (यह आंखों से आंसू आ जाना न बे-सब्री है, न मना है, न ताज्जुब करने की चीज़ है, बल्कि फ़ितरी तौर पर जो इंसान के दिल में रहमत और मुहब्बत अल्लाह ने रखी है) यह (उस) रहमत (का असर) है। इसके बाद फिर अन्दर से आपका दिल भर आया और दोबारा रोने लगे। और यों फ़रमाया—

إِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ وَلَا نَقُوْلُ اِلَّا مَا يُرْضِى رَبَّنَا وَاِنَّا بِفِرَاقِكَ يَا اِبْرَاهِيْمَ لَمَحْزُوْنُوْنَ۔

तर्जुमा—बेशक आंखों में आंसू हैं और दिल में रंज है और ज़ुबान से हम कोई ऐसी बात नहीं कहते जो अल्लाह की रिज़ा के ख़िलाफ़ हो। हम वही कहते हैं जिससे हमारा रब राज़ी हो और तेरी जुदाई से ऐ इब्राहीम! हमको रंज है।

फिर उसी वक़्त इब्राहीम रज़ि॰ की वफ़ात हो गई। उनकी वफ़ात पर सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि मेरा बच्चा दूध पीने के ज़माने में दुनिया से रुख़्सत हो गया है और यक़ीन जानो उसके लिए अल्लाह की तरफ़ से दूध पिलाने वालियां मुक़र्रर (की गई) जो जन्नत में दूध पिलाकर इस मुद्दत को पूरा करेंगी जो दूध पिलाने की होती है।[1]

---

1. मुस्लिम शरीफ़,

दूध पिलाने की मुद्दत पूरी कराने के लिए अल्लाह की ओर से उस बच्चे और उसके वालिद मुकर्रम ﷺ की इज़्ज़त बढ़ाने के लिए ख़ुसूसी तौर पर दूध पिलाने वालियां मुक़र्रर की गईं और उस बच्चे को दुनिया से रुख़्सत होते ही जन्नत में भेज दिया गया।[1]

قَالَ فِي شَرْحِ الْمَوَاهِبِ وَقَدِمَ الْخَبَرُ وَفِي قَوْلِهِ إِنَّ لَهُ ظِئْرَيْنِ إِشَارَةٌ إِلَى اِخْتِصَاصِ هٰذَا الْحُكْمِ. الخ

वफ़ात के बाद सैयदे आलम ﷺ ने अपने बच्चे की नमाज़ जनाज़ा ख़ुद पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ में हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन ﷺ की क़ब्र के पास दफ़न फ़रमाया। हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास ﷺ ने इनको गुस्ल दिया और क़ब्र में रखने के लिए हज़रत फ़ज़्ल और उमामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा उतरे। सैयदे आलम ﷺ क़ब्र के किनारे तशरीफ़ फ़रमा रहे। दफ़न के बाद क़ब्र पर पानी छिड़क दिया गया और पहचान के लिए पत्थर के टुकड़े क़ब्र पर रख दिए गए, सबसे पहले उन ही की क़ब्र पर पानी छिड़का गया।[2]

जाहिलियत के ज़माने में लोगों का ख़्याल था कि किसी बड़े आदमी के पैदा होने या वफ़ात पाने की वजह से चांद-सूरज गिरहन होते हैं। जिस दिन हज़रत इब्राहीम ﷺ की वफ़ात हुई तो सूरज गिरहन हो गया। आंहज़रत ﷺ ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को दो रक्अत नमाज़ बड़ी लम्बी पढ़ाई। फिर जब गिरहन

1. नववी शरह मुस्लिम
2. उसदुल ग़ाबा, मिश्कात शरीफ़

ख़त्म हो गया तो मौजूद लोगों से फ़रमाया कि चांद-सूरज अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियां हैं। इनके (गिरहन के) ज़रिए अल्लाह अपने बन्दों को डराते हैं और यक़ीन जानो कि उनका गिरहन किसी के मरने और पैदा होने की वजह से नहीं होता। जब ऐसा मौक़ा आए तो नमाज़ में मश्गूल हो जाओ और इस हालत के दूर होने तक नमाज़ में मश्गूल रहो।[1]

हज़रत मारिया रज़ियल्लाहु अन्हा अपने बच्चे की वफ़ात के बाद वर्षों ज़िंदा रहीं। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ؓ (बैतुलमाल से) उनका ख़र्च उठाते थे। उनके बाद हज़रत उमर ؓ ने भी अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में यह सिलसिला जारी रखा, यहां तक कि मुहर्रम सन् 16 हि० में हज़रत मारिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने वफ़ात पाई। हज़रत उमर ؓ ने उनके जनाज़े की शिर्कत का इतना एहतिमाम किया कि लोगों को बाक़ायदा ख़ुद इकट्ठा किया और नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न की गईं।[2]

फ़ायदा

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ अल्लाह की तरफ़ से इसलिए भेजे गए कि उम्मत को अमल से और क़ौल से हर तरह की तालीम दें, चुनांचे आपकी ज़िंदगी में हर तरह के हालात पेश आए जो उम्मत के लिए नमूना हैं और आंहज़रत ﷺ के हालात और इर्शादों से उम्मत

1. नसई शरीफ़ व उसदुल ग़ाबा
2. अल-इसाबा

को ज़िंदगी के शोबे में अमल करने के लिए सबक़ मिलता है। हज़रत इब्राहीम ﷺ के वाक़िए ही को ले लीजिए। इसमें बहुत-से अह्काम व आदाब मिलते हैं–

1. बच्चों को चूमना, चिमटाना, प्यार करना, दीनदारी के ख़िलाफ़ नहीं है, बल्कि सैयदे आलम ﷺ की सुन्नत है। अपनी औलाद की ख़ैर-ख़बर और देख-भाल के लिए उनके पास आना-जाना भी सही दीनदारी है।

2. बच्चों को उनकी मां के अलावा ग़ैर-औरत से दूध पिलवाना दुरुस्त है।

3. यह भी मालूम हुआ कि बड़ों के साथ ख़िदमतगारों का जाना बल्कि मौक़े के हिसाब से उनसे आगे पहुंच कर उनके बैठने-उठने और आराम का इन्तिज़ाम कर देना मुस्तहब है।

4. अपने बाल-बच्चों या क़रीबी रिश्तेदार की वफ़ात पर दिल का रंजीदा होना और आंसुओं का आ जाना शरीअत के ख़िलाफ नहीं है, बल्कि आंहज़रत ﷺ की सुन्नत है। मुल्ला अली क़ारी रह० फ़रमाते हैं कि यह हालत कमाल वालों के नज़दीक उन बुज़ुर्गों के हालात से बेहतर और अक्मल है जिनके हालात के बारे में नक़ल किया जाता है कि अपनी औलाद पर हंसे।

अलबत्ता यह ना-दुरुस्त और शरीअत के ख़िलाफ़ है कि किसी के वफ़ात पाने पर ज़ुबान से ऐसे लफ़्ज़ निकाले जो कुफ़्र वाले हों और जिनसे अल्लाह पर एतराज़ होता हो। रंज और तक्लीफ़ के मौक़े पर भी इंसान अल्लाह का बन्दा है और उस वक़्त भी उसको शरीअत के हुक्मों पर अमल करना ज़रूरी है। आजकल के बहुत-से

मर्द और औरतें मुसीबत के वक़्त अपने आपको बे-ख़ुद समझ कर कुफ़्र के लफ़्ज़ ज़ुबान से निकालते हैं और कपड़े फाड़ते हैं और ज़ोर-ज़ोर से रोते हैं।

हदीस शरीफ़ में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया–

لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْخُدُوْدَ وَشَقَّ الْجُيُوْبَ وَدَعٰى بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ رَوَاهُ الشَّيْخَانِ وَفِى رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ مَرْفُوْعًا اَنَا بَرِئٌ مِمَّنْ حَلَقَ وَصَلَقَ وَخَرَقَ۔

'वह हम में से नहीं, जो (रंज व ग़म के मौक़े पर) मुंह पीटे और गरीबान फाड़े और जाहिलियत की दुहाई दे।'

दूसरी रिवायत में है कि आपने फ़रमाया–

'मैं इससे बरी हूं जो (रंज व ग़म में) बाल मुंडाए या चिल्ला कर रोए और कपड़े फाड़े।' (मिश्कात शरीफ़)

अलहम्दु लिल्लाह पाक बेटियों, बल्कि तमाम औलाद के ज़रूरी हालात मुकम्मल हो गए। अब इस रिसाले को ख़त्म करता हूं। पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि हक़ीर फ़क़ीर को और उसके उस्तादों और मां-बाप को अपनी दुआओं में ज़रूर याद फ़रमाएं।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مُتَّبِعِيْنَ لِسُنَّةِ نَبِيِّنَا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمُهْتَدِيْنَ بِهَدْيِهٖ وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا قَابِلِيْهَا وَاَتِمَّهَا عَلَيْنَا وَاجْعَلْنَا مُفْلِحِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا وَسَنَدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔

अल्लाहुम-मज़ अलना मुत्तबई-न लि सुन्नति नबीयिना ﷺ व

मुहतदी-न बिहदयिही वज-अलना शाकिरी-न लि. नेमति-क मुस्नी-न बिहा क़ाबिलीहा व अतिम्महा अलैना वज अलना मुफ़्लिही-न बिरहमति-क या अरहमर्राहिमीन व सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़ल्क़िही सैयदिना व सनदिना मुहम्मदिंव-व आलिही व सह्बिही अजमईन०

चालीस हदीसें

जिनका ज़्यादातर ताल्लुक़ औरतों से है

मुअल्लिमे इंसानियत हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ ने—

(1) **फ़रमाया कि** जब बन्दे ने निकाह कर लिया तो आधा दीन पूरा कर लिया। अब उसको चाहिए कि बाक़ी आधे में ख़ुदा से डरे। (बैहक़ी)

(2) **फ़रमाया कि** जब कोई दीनदार और अच्छे अख़्लाक़ वाला तुम्हारे यहां निकाह का पैग़ाम भेजे तो उससे निकाह कर दो, वरना ज़मीन में फ़ित्ना और बड़ा फ़साद होगा। (तिर्मिज़ी)

(3) **फ़रमाया कि** तीन आदमियों की मदद ख़ुदा के ज़िम्मे है— 1.वह ग़ुलाम मुकातब[1] जिसकी नीयत अदाएगी की हो, 2.वह निकाह करने वाला जिसकी नीयत पाक दामन रहने की हो, 3.अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला। (तिर्मिज़ी)

(4) **फ़रमाया कि** चार चीज़ें देखकर औरत से निकाह किया जाता है—

1.माल, 2.ख़ानदानी बड़ाई, 3.ख़ूबसूरती, 4.दीनदारी, पस तुम दीनदार औरत हासिल करके कामयाब बनो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

(5) **फ़रमाया कि** जब कभी कोई ग़ैर मर्द किसी औरत के साथ

---

1. मुकातब वह ग़ुलाम जिसका आक़ा तय रक़म लेकर आज़ाद करने का वायदा कर ले।

तंहाई में होता है तो वहां ज़रूर तीसरा शैतान (भी) होता है।

(6) **फ़रमाया** कि मेरी तरफ़ से औरतों के साथ भलाई से पेश आने की वसीयत क़ुबूल कर लो। (मिश्कात)

(7) **फ़रमाया** कि औरत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है, किसी तरह सीधी नहीं हो सकती। उसकी टेढ़ के होते हुए ही उससे नफ़ा हासिल कर सकते हो। अगर उसको सीधी करने लगोगे, तो तोड़ दोगे और औरत का तोड़ना तलाक़ दे देना है। (मुस्लिम)

(8) **फ़रमाया** कि अपनी औरत को गुलाम की तरह न मारो, (क्योंकि) आख़िर शाम को उसके साथ लेटोगे। (मिश्कात)

(9) **फ़रमाया** कि इसमें शक नहीं कि पूरे ईमान वाले मोमिन वे भी हैं जो अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं और अपनी बीवियों के साथ नर्मी का बर्ताव रखते हैं। (तिर्मिज़ी)

(10) **फ़रमाया** कि जिसको ये चार चीज़ें मिल गईं, उसको दुनिया और आख़िरत की भलाई मिल गई—1.शुक्रगुज़ार दिल, 2.अल्लाह की याद में लगी रहने वाली ज़ुबान, 3.मुसीबत पर सब्र करने वाला जिस्म, 4.अमानतदार बीवी, जो अपने नफ़्स और शौहर के माल में ख़ियानत न करे। (मिश्कात)

(11) **फ़रमाया** कि तलाक़ से ज़्यादा बुग़्ज़ वाली कोई चीज़ ख़ुदा ने ज़मीन पर पैदा नहीं फ़रमाई। (मिश्कात)

(12) **फ़रमाया** कि कोई आदमी अपने भाई की मंगनी पर मंगनी न करे, यहां तक कि वह निकाह कर ले या छोड़ दे। (मिश्कात)

(13) **फ़रमाया** कि वह आदमी लानतज़दा है, जो अपनी औरत से इग्लाम (कुकर्म) करे। (अहमद, अबू दाऊद)

(14) **फ़रमाया** कि जिसकी दो बीवियां हों और वह इन दोनों में बराबरी न करता हो, तो क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उसका एक पहलू गिरा हुआ होगा। (तिर्मिज़ी)

(15) **फ़रमाया** कि जब मर्द अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाए और न आए, जिसकी वजह से मर्द नाराज़ी में रात गुज़ारे, तो सुबह तक औरत पर फ़रिश्ते लानत करते रहेंगे। (मिश्कात)

(16) **फ़रमाया** कि जो औरत अपने शौहर को राज़ी छोड़कर मरे, वह जन्नत में दाख़िल होगी। (मिश्कात)

(17) **फ़रमाया** कि जब औरत पांच वक़्त की नमाज़ पढ़े और रोज़े रमज़ान के रखे और अपनी आबरू की हिफ़ाज़त करे और अपने शौहर की इताअत करे तो जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाए। (मिश्कात)

(18) **फ़रमाया** कि जब मर्द अपनी ज़रूरत के लिए बीवी को बुलाए तो आ जाए अगरचे तन्नूर पर काम कर रही हो। (तिर्मिज़ी)

(19) **फ़रमाया** कि वह आदमी हम में से नहीं है जो किसी औरत को उसके शौहर के ख़िलाफ़ या गुलाम को उसके आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काए। (मिश्कात)

(20) **फ़रमाया** कि कोई औरत शौहर की इजाज़त के बग़ैर (नफ़्ली) रोज़े न रखे, जबकि शौहर घर पर हो। (अबू दाऊद)

(21) **फ़रमाया** कि तीन आदमियों की न नमाज़ क़ुबूल होती है, न उनकी कोई नेकी ऊपर जाती है—1. भागा हुआ गुलाम जब तक वापस आकर अपने आक़ा के हाथ में हाथ न दे दे। 2. वह औरत जिससे उसका शौहर नाराज़ हो, 3. नशा पीकर बेहोश हो जाने वाला

जब तक होश में न आए। (मिश्कात)

(22) **फ़रमाया** कि जो औरत बग़ैर मजबूरी के अपने शौहर से तलाक़ का सवाल कर ले, उस पर जन्नत की ख़ुश्बू हराम है। (तिर्मिज़ी)

(23) **फ़रमाया** (एक सवाल के जवाब में) कि बेहतर औरत वह है जो अपने मर्द को ख़ुश करे, जब मर्द उसकी ओर देखे और जब मर्द हुक्म करे तो कहा माने और अपनी जान के बारे में शौहर की मुख़ालफ़त न करे, (यानी ग़ैर से आंख न मिलाए और दिल न लगाए) और शौहर के माल में उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ ख़र्च न करे। (मिश्कात)

(24) **फ़रमाया** कि जो आदमी क़ुदरत होते हुए अच्छे कपड़े ख़ाकसारी में न पहने, ख़ुदा उसको करामत का जोड़ा पहनाएगा और जो आदमी अल्लाह के लिए निकाह करे, अल्लाह उसको शाही ताज पहनाएगा। (मिश्कात)

(25) **फ़रमाया** कि ख़ुदा की लानत है उन मर्दों पर जो औरतों जैसे बनें और ख़ुदा की लानत है उन औरतों पर जो मर्दों जैसी बनें। (मिश्कात)

(26) **फ़रमाया** कि मर्दों की ख़ुश्बू ऐसी हो, जिसका रंग नज़र न आए और ख़ुश्बू आए और औरतों की ख़ुश्बू ऐसी हो जिसका रंग नज़र आए और ख़ुश्बू कम आए। (तिर्मिज़ी)

(27) **फ़रमाया** कि शराब में सारे गुनाह मौजूद हैं और औरतें शैतान के जाल हैं और दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है। (मिश्कात)

(28) **फ़रमाया** कि मैंने जन्नत में नज़र डाली तो देखा कि अक्सर ग़रीब हैं और दोज़ख़ में नज़र डाली तो देखा कि उसमें अक्सर औरतें हैं। (मिश्कात)

(29) **फ़रमाया** कि ऐ औरतो! सदक़ा किया करो, अगरचे ज़ेवर ही से दो, क्योंकि क़ियामत के दिन दोज़ख़ में अक्सर तुम ही होगी। (मिश्कात)

(30) **फ़रमाया** कि औरत छिपी हुई चीज़ है। जब बाहर निकलती है तो शैतान उसको तकने लगता है। (तिर्मिज़ी)

(31) **फ़रमाया** कि औरतों की मक्कारियों से बचो, क्योंकि बेशक बनी इस्राईल में सबसे पहला फ़ित्ना औरतों में खड़ा हुआ। (मिश्कात)

(32) **फ़रमाया** कि कोई मोमिन अपनी मोमिन बीवी से बुग्ज़ न रखे, क्योंकि अगर एक खस्लत (आदत) नापसन्द होगी तो दूसरी पसन्द आ जाएगी। (मिश्कात)

(33) **फ़रमाया** कि जिसने उस औरत को तसल्ली दी, जिसका बच्चा जाता रहा हो, तो उसको जन्नत में चादरें पहनाई जाएंगी। (मिश्कात)

(34) **फ़रमाया** कि उस औरत पर ख़ुदा लानत करे जो (किसी के मरने पर) ज़ोर से और बयान करके रोए और उस औरत पर जो उसका रोना सुने। (मिश्कात)

(35) **फ़रमाया** कि ऐ औरतो! سُبْحَانَ اللّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ सुब्हानल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु और سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ सुब्हानल मलिकिल क़ुद्दूस का विर्द रखो और उंगलियों पर पढ़ा करो,

क्योंकि उंगलियों से मालूम किया जाएगा और उनको ज़ुबान दी जाएगी और ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न हो जाओ, वरना ख़ुदा की रहमत से भुला दी जाओगी। (तिर्मिज़ी)

(36) **फ़रमाया** कि ख़बरदार! तुम सबके सब निगहबान हो और सबसे अपनी-अपनी रईयत[1] का सवाल होगा। इक्तिदार वाला आम जनता का निगहबान है, उससे उसकी रईयत का सवाल होगा और मर्द अपने घर वालों का निगहबान है, उससे उसकी रईयत का सवाल होगा और औरत अपने शौहर के घर और उसकी औलाद की निगहबान है, उससे उसके शौहर के माल व औलाद का सवाल होगा और गुलाम अपने आक़ा के माल का निगहबान है, उससे उसके माल का सवाल होगा। ख़बरदार! तुम सब निगहबान हो और सबसे अपनी-अपनी रईयत का सवाल होगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

(37) **फ़रमाया** कि जो औरत ख़ुश्बू लगाकर मर्दों पर गुज़रे, ताकि उसकी ख़ुश्बू सूंघें तो ऐसी औरत ज़िनाकार है। फिर फ़रमाया कि हर आंख ज़िनाकार है। (यानी ना-महरम मर्द या औरत को देखना भी ज़िना है। (तर्ग़ीब)

(38) **फ़रमाया** कि दो गिरोह दोज़ख़ी होंगे जिनको मैंने नहीं देखा है (यानी अभी वे मौजूद नहीं हुए) एक वे लोग जो बैलों की दुमों की तरह कोड़े लिए फिरेंगे और उनसे लोगों को मारेंगे। दूसरे वे औरतें

---

1. जो चीज़ किसी की निगरानी में दी जाए, अरबी में उसे उस आदमी की रईयत कहते हैं।

जो कपड़े पहने होंगी, (मगर) नंगी होंगी।[1] मर्दों को अपनी तरफ़ मायल करेंगी और ख़ुद उनकी तरफ़ मायल होंगी। उनके सर ऊंटों के झुके हुए कोहानों की तरह होंगे। ये औरतें जन्नत में दाख़िल न होंगी और उसकी ख़ुश्बू तक न सूंघेंगी। (मुस्लिम)

(39) **फ़रमाया** कि जो कुछ तू अपने आपको खिलाए वह सदक़ा है जौर जो अपनी औलाद को खिलाए, वह सदक़ा है और जो अपनी बीवी को खिलाए, वह सदक़ा है और जो अपने नौकर को खिलाए वह सदक़ा है। (अहमद)

(40) **फ़रमाया** कि अल्लाह उस औरत की तरफ़ (रहमत की नज़र से) न देखेगा जो अपने शौहर की शुक्रगुज़ार नहीं, हालांकि उसकी मुहताज रहती है। (नसई)

---

1. कपड़े पहने हुए नंगी होने की कई शक्लें है—एक यह कि कपड़े बारीक हों, जिनसे बदन नज़र आए। दूसरे यह कि चुस्त लिबास हो, जो बदन की बनावट ज़ाहिर करता हो। तीसरे यह कि लिबास इतना कम हो जो पूरे जिस्म को न ढकता हो, जैसे कि आजकल की औरतें सिर्फ़ फ़राक पहन कर रहती हैं और लड़कियों को अक्सर पहनाया जाता है जिसके नीचे पाजामा भी नहीं होता, इसलिए पिंडुलियां और सारी बांहें सब देखते हैं। (अल-अयाज़ बिल्लाह)

लिबास और ज़ेवर से मुताल्लिक़ ज़रूरी मस्अले

लिबास तन ढकने की चीज़ है और इस फ़ायदे के अलावा सर्दी-गर्मी का बचाव भी लिबास से होता है। दीन इस्लाम ने ख़ूबसूरत लिबास पहनने की इजाज़त दी है, मगर इसी हद तक इजाज़त है जबकि फ़िज़ूलख़र्ची न हो और इतराव और दिखावा मक़्सूद न हो और ग़ैर-क़ौमों का लिबास न हो। एक हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत रसूले मक़्बूल ﷺ ने फ़रमाया कि खाओ-पियो और सदक़ा करो और पहनो, जब तक कि फ़िज़ूलख़र्ची और ख़ुदपसन्दी (यानी मिज़ाज में बड़ाई) न आवे।[1] आजकल मुसलमान औरतों ने लिबास पहनने के बारे में कई ख़राबियां पैदा की हैं। हम उन पर तंबीह करते हैं।

एक ख़राबी यह है कि बारीक कपड़े पहनती हैं, बारीक कपड़ा जिससे बदन नज़र आवे। उसका पहनना-न पहनना दोनों बराबर हैं। हज़रत आइशा रज़ि० की भतीजी एक बार उनके पास आईं। उनकी ओढ़नी बारीक थी। हज़रत आइशा रज़ि० ने वह ओढ़नी फाड़ डाली और अपने पास से मोटे कपड़े की ओढ़नी ओढ़ा दी।

(मिश्कात शरीफ़)

हज़रत रसूले मक़्बूल ﷺ ने फ़रमाया कि दोज़ख़ियों के दो

---

1. मिश्कात शरीफ़

गिरोह पैदा होने वाले हैं, जिनको मैंने नहीं देखा है, (क्योंकि अभी वे पैदा नहीं हुए हैं) एक गिरोह ऐसा पैदा होगा जो बैलों की दुमों की तरह (लम्बे-लम्बे) कोड़े लिए फिरेंगे और उनसे लोगों को मारा करेंगे। दूसरा गिरोह एक ऐसी औरतों का पैदा होगा जो कपड़े पहने हुए भी नंगी होंगी। (ग़ैर मर्दों को) अपनी तरफ़ माइल करेंगी और ख़ुद भी (उनकी तरफ़) माइल होंगी। उनके सर ऊंटों की झुकी हुई कमरों की तरह होंगे। ये औरतें न जन्नत में दाख़िल होंगी, न जन्नत की ख़ुश्बू सूंघेंगी।[1]

देखो कैसी सख़्त वईद है कि ऐसी औरतें जन्नत की ख़ुश्बू भी न सूंघ सकेंगी, जन्नत में जाने का तो ज़िक्र ही क्या है। कपड़ा पहने हुए नंगा होने की कई शक्लें हैं। एक सूरत यह है कि कपड़े बारीक हों और दूसरी सूरत यह है कि थोड़ा-सा कपड़ा पहन लें और जिस्म का बहुत-सा हिस्सा खुला रहे। जैसे फ़राक पहन कर बाज़ारों में चली जाती हैं और सर और बांहें और मुंह और पिंडुली सब खुली रहती हैं। अल्लाह बचाए ऐसे लिबास से।

दूसरी ख़राबी यह है कि काफ़िर औरतों की नक़ल उतारती हैं। जो लिबास ईसाई लेडियां या सिनेमा में काम करने वाली ऐक्ट्रेसें पहनती हैं, वही ख़ुद पहनने लग जाती हैं। याद रखो, दूसरी क़ौमों का लिबास पहनना सख़्त गुनाह है। इर्शाद फ़रमाया अल्लाह के रसूल ﷺ ने कि जिसने किसी क़ौम की तरह अपना हाल बनाया, वह उन्हीं में से है।[2]

तीसरी ख़राबी यह है कि नाम व नमूद और बड़ाई जताने और

1. मिश्कात शरीफ़ 2. मिश्कात शरीफ़

अपनी मालदारी ज़ाहिर करने के लिए अच्छा-अच्छा लिबास पहनती हैं। नाम व नमूद बुरी चीज़ है। इर्शाद फ़रमाया, हज़रत रसूले मक़्बूल ﷺ ने कि जिसने दुनिया में नाम होने के लिए कपड़ा पहना, क़ियामत के दिन अल्लाह उसको ज़िल्लत का लिबास पहनाएंगे।[1]

चौथी ख़राबी यह है कि बिला-ज़रूरत कपड़े बनाती रहती हैं। दर्ज़ी फ़ैशन वाले नए-नए डिज़ाइन निकालते रहते हैं। जहां किसी औरत को देखा कि नई कांट-छांट का कपड़ा पहने हुए है, बस अब शौहर के सर हो जाएंगी, उधार क़र्ज़ करके जैसे बन पड़े, उस क़िस्म का लिबास बना दे। यह फ़िज़ूलख़र्ची और शौहर के सताने की बातें हैं, जिस्म छिपाने के लिए और सर्दी-गर्मी से बचने के लिए शरअ के मुताबिक़ लिबास पहनो, दो तीन जोड़े हों, उसी पर बस करो। बिला ज़रूरत शौहर को लोहे के चने चबवाना बुरी बात और सख़्त ऐब है।

फिर यह मुसीबत भी है कि अगरचे कई जोड़े रखे हैं, मगर मिलने-जुलने जाने के लिए हर मौक़े पर नया जोड़ा पहनना ज़रूरी समझती हैं, यह ख़्याल होता है कि देखने वाली औरतें कहेंगी कि इसके पास बस यही तीन-चार जोड़े हैं, इन्हीं को बार-बार पहन कर आ जाती है, सिर्फ़ नाक ऊंची करने और बड़ाई जताने के लिए अब शौहर को सताती हैं और तक़ाज़ा है कि कपड़े और बना दे। अगर उसने ख़्याल न किया तो जो रुपया उसने किसी ज़रूरत के लिए या किसी का क़र्ज़ देने के लिए रखा था, चुपके से निकाल कर कपड़ा

1. मिश्कात, शरीफ़

ख़रीद लिया। अब शौहर परेशान होता है कि जिसका क़र्ज़ था, उसके सामने ज़लील होता है या और किसी बड़ी परेशानी में पड़ जाता है, ख़बरदार ऐसा मत करो।

बुर्क़ा सर से पांव तक जिस्म छिपाने के लिए बेहतरीन चीज़ है, मगर अब ऐसा बुर्क़ा बनने लगा है कि उस पर बेल-बूटे बनाए होते हैं, जिसका मतलब यह हुआ कि जो न देखे, वह भी देखे, कुछ तो किसी का ख़्याल हमारी तरफ़ आवे। तौबा-तौबा! परदा क्या हुआ, नज़र खींचने वाला कपड़ा बन गया और बहुत-सी औरतें इतना ऊंचा बुर्क़ा पहनती हैं कि शलवार या साड़ी जो पिंडलियों पर होती है, सबको नज़र आती है और पांव भी दिखाई देते हैं। ऐसा बुर्क़ा मत पहनो, ख़ूब नीचा बुर्क़ा पहनो और बहुत-सी औरतें बुर्क़े के अन्दर से दोपट्टे का कुछ हिस्सा बाहर को लटका देती हैं। यह भी बुरी हरकत है। वह क्या परदा हुआ जिससे ग़ैर की नज़र अपनी तरफ़ मुतवज्जह हुई। साड़ी अगर पहनो तो इतनी नीची पहनो कि पिंडुलियां और टख़ने छिपे रहें और पूरी आस्तीन का कुरता या क़मीज़ पहनो जो इतना लम्बा हो कि पेट और कमर न खुले। ऊपर से साड़ी पहन लो। पेट और कमर का सख़्त परदा है, अपने सगे भाई-बाप से भी इन दोनों को छिपाओ।

ज़ेवर

औरतों को ज़ेवर पहनना जायज़ है। लेकिन ज़्यादा न पहनना बेहतर है। जिसने दुनिया में न पहना, उसको आख़िरत में बहुत मिलेगा।

मस्अला—बजने वाला ज़ेवर पहनना दुरुस्त नहीं और छोटी लड़की को पहनाना भी दुरुस्त नहीं, जैसे झांझन वग़ैरह। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा जो हज़रत रसूले मक़्बूल ﷺ की बीवी थीं, उनके पास एक बच्ची को लेकर एक औरत आई। उस बच्ची ने बजने वाला ज़ेवर पहन रखा था। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, इस बच्ची को मेरे पास हरगिज़ न लाना, जब तक उसका यह ज़ेवर का टुकड़ा अलग न कर दो। मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ से सुना है कि जिस घर में बजने वाले घुंघरू हों, उसमें फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते।[1]

मस्अला—चांदी-सोने के अलावा किसी दूसरी चीज़ का ज़ेवर पहनना भी दुरुस्त है, जैसे पीतल, गिलट, रोल्ड गोल्ड का ज़ेवर, मगर अंगूठी सोने-चांदी के अलावा किसी दूसरी चीज़ की दुरुस्त नहीं और मर्दों को सिर्फ़ चांदी की अंगूठी पहनना जायज़ है[2], किसी और चीज़ की जायज़ नहीं चाहे सोना हो या और कोई धातु हो।

मस्अला—जो चीज़ें मर्दों को पहनना जायज़ नहीं, नाबालिग़ लड़कों को पहनाना भी जायज़ नहीं। लड़कों को रेशमी कपड़ा पहनाना या कान में बाली-बुन्दा या गले में हंसुली डालना या चांदी का तावीज़ पहनाना, यह सब पहनाना नाजायज़ है।

मस्अला—चांदी-सोने के बरतन में खाना-पीना या चांदी-सोने के चमचे से खाना या उनसे बने हुए ख़िलाल से दांत साफ़ करना जायज़

---

1. मिश्कात शरीफ़
2. चांदी की अंगूठी मर्दों को इस शक्ल में जायज़ है, जबकि उसका वज़न चार माशा से कम हो।

नहीं है।

मस्अला—सोने-चांदी की सुरमेदानी या सलाई से सुरमा लगाना या उनकी प्याली से तेल लगाना या ऐसे आइने में मुंह देखना, जिसका फ्रेम सोने या चांदी का हो, यह सब नाजायज़ है। मर्दों और औरतों सबका एक ही हुक्म है।

तंबीह—ज़ेवर पहन कर दिखावा करना और बड़ाई जताना सख़्त गुनाह है। बहुत-सी औरतें ज़ेवर पहन कर तर्कीबों से अपना ज़ेवर ज़ाहिर करती हैं। गर्मी लगने के बहाने से गले का हार और कानों के बुन्दे दिखाती हैं। कोई न पूछे तो तरह-तरह की बातें छेड़ कर अपने बुन्दों की क़ीमत और डिजाइन का अनोखा होना ज़ाहिर करती हैं और मालदारी की बड़ाई जताती हैं, यह सख़्त गुनाह है।

हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत रसूले मक़्बूल ﷺ ने औरतों से फ़रमाया, क्या तुम चांदी के ज़ेवर से गुज़ारा नहीं कर सकती हो? (फिर फ़रमाया कि) जो औरत तुममें से सोने का ज़ेवर पहन कर (बड़ाई जताने के लिए) दिखावेगी तो उसकी वजह से अज़ाब दिया जाएगा।

—मिश्कात शरीफ़

اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا آمِيْن يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْن بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْن

अल्लाहुम्मह्फ़ज़्ना आमीन या रब्बल आलमीन बिरहमति-क या अरहमर्राहिमीन
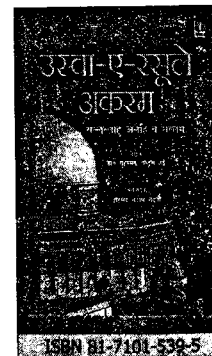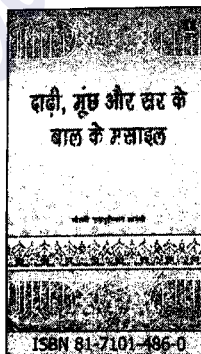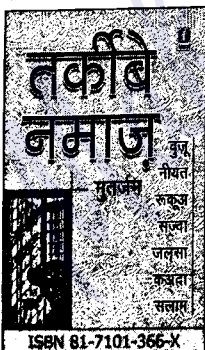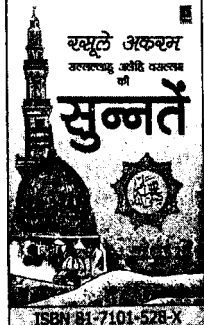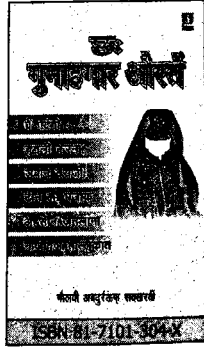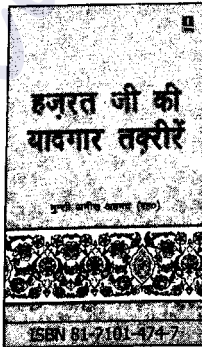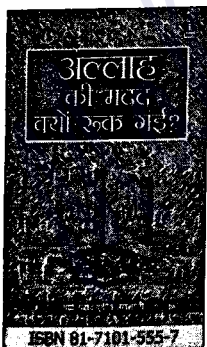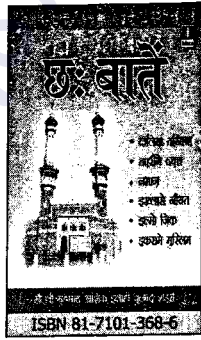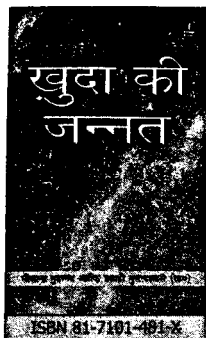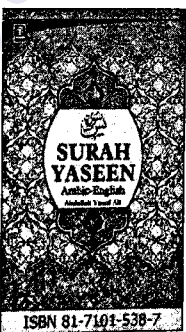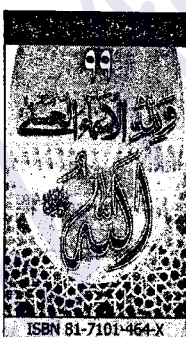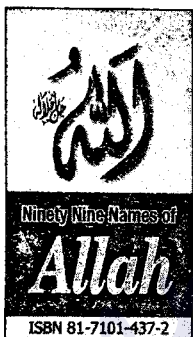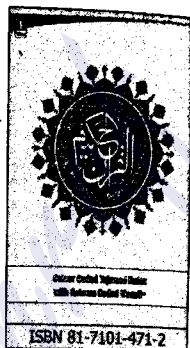
दीन से बे–फ़िक्री और आख़िरत से ग़फ़लत जो औरतों में दिन –ब–दिन बडी तेजी के साथ बढ़ रही है उसकी रोकथाम का ये एक ही ज़रिया है कि उन्हें क़ुरआन व हदीस के हुक्मों, नसीहतों, अच्छी बातों और आदाब व अख़्लाक़ से आगाह किया जाए और नुबूवत के दौर की औरतों यानी हुज़ूरे अक्दस स०, की पाक बीवियों और पाक बेटियों और दूसरी सहाबियात की अच्छी ख़ूबियों और अच्छे हालात की जानकारी दी जाए।

मुसन्निफ़ ने इस किताब में सरदारे दो जहां, की साहबज़ादियों हज़रत ज़ैनब (रज़ि), हज़रत रुक़ैया (रज़ि), हज़रत उम्मे कुलसूम (रज़ि) और हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा (रज़ि) की जिन्दगी के तफ़्सीली हालात लिखे हैं, यह हालात बहुत सबक़ वाले हैं और हर घर में उनको सुनाने की ज़रुरत है।

आंहज़रत, के साहबज़ादों की तायदाद के बारे में उलामा-ए-किराम की अलग– अलग राय है इसलिए इस किताब में सिर्फ़ एक साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम के कुछ हालात जमा कर दिए हैं जो कि हदीस की किताबों में मिलते हैं, जिनका मालूम होना मुसलमानों के लिए नसीहत व हिदायत का सबब होगा।

किताब के आख़िर में चालीस हदीसें जिनका ज़्यादातर तअल्लुक औरतों से है और औरतों के लिबास और जेवर से मुताल्लिक़ ज़रुरी मस्अले भी दिए गए हैं जिनका जानना आजकल की औरतों के लिए बेहद ज़रुरी है।

ISBN 81-7101-444-5 www.idara.co
9788171014446 ₹ 40000